गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 206
दि. 27.11.2025,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

बीजापुर में नक्सल मोर्चे पर ऐतिहासिक बदलाव, 1.19 करोड़ के इनामी 41 माओवादी हथियार डालकर मुख्यधारा से जुड़ने को तैयार

(जीएनएस)। छत्तीसगढ़ का बीजापुर जिला वर्षों से नक्सल उग्रवाद की काली छाया में जकड़ा रहा है। घने जंगलों, दुर्गम पहाड़ियों और दूरदराज़ बसे हुए आदिवासी गांवों के बीच नक्सली हिंसा ने न जाने कितने परिवारों को उजाड़ा, कितने सपनों को अपंग किया और कितनी ही पीढ़ियों को भय की यातना में जीने को मजबूर कर दिया। लेकिन मंगलवार को इसी बीजापुर ने एक ऐसी घटना देखी जिसने इस संघर्ष की दिशा ही बदल दी। जिले में सक्रिय कुल 41 माओवादियों ने सुरक्षा बलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया—ऐसे लोग जिन पर मिलाकर 1 करोड़ 19 लाख रुपये तक के इनाम घोषित थे, जिनके नाम कभी पुलिस रिकॉर्ड की सबसे खतरनाक फाइलों में दर्ज थे, और जिनकी तलाश में महीनों तक जंगल छानने पड़ते थे। पुलिस की ओर से मिली पुष्टि के अनुसार समर्पण करने वालों में साउथ सब जोनल ब्यूरो के 39 अनुभवी और लंबे समय से सक्रिय सदस्य शामिल हैं, जबकि बाकी माओवादी तेलंगाना स्टेट कमेटी और धमतरी–गरियाबंद–नुआपाड़ा डिवीजन से जुड़े बताए गए हैं। महिलाओं और पुरुषों दोनों की उल्लेखनीय संख्या यह संकेत देती है कि नक्सल संगठनों के भीतर अब वैचारिक दरारें गहराने लगी हैं। 12 महिला कैडर और 29 पुरुष कैडर का एक साथ हथियार छोड़ना यह भी दर्शाता है कि जंगलों में छिपी हिंसक ज़िंदगी की थकान और सामान्य जीवन की चाहत धीरे-धीरे मजबूत होती जा रही है। बीजापुर के पुलिस अधीक्षक डॉ. जितेंद्र कुमार यादव ने बताया कि राज्य सरकार की पुनर्वास नीति 'पूना मारगेम' ने इस बदलाव में सबसे अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि "जिन हाथों में बंदूकें थीं, वे अब सम्मानजनक जीवन, स्थायी रोजगार और सुरक्षित भविष्य की उम्मीद देख पा रहे हैं। कई माओवादी कैडर अपने परिवारों से वर्षों से दूर थे। अब उनके परिजन खुद उन्हें हिंसा छोड़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। सरकार उन्हें सुरक्षा, आवास, वित्तीय सहायता और पुनर्वास के सभी अवसर दे रही है।" एसपी के अनुसार, यह केवल आत्मसमर्पण नहीं, बल्कि उस मनोवैज्ञानिक दीवार के गिरने का संकेत है जिसे नक्सलियों ने दशकों तक खड़ा कर रखा था।

सुरक्षा अधिकारियों ने बताया कि आत्मसमर्पण करने वालों की पृष्ठभूमि बेहद विविध और संगठनात्मक रूप से महत्वपूर्ण है। पीएलजीए बटालियन-01 के 5 प्रशिक्षित सदस्य, एसीएम-03 के सदस्य, 11 प्लाटून और एरिया कमेटी से जुड़े कैडर, 2 पीएलजीए सदस्य, 4 मिलिशिया प्लाटून कमांडर, एक डिप्टी कमांडर, 6 अन्य सदस्य और जनताना सरकार तथा उससे जुड़े नौ विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि भी इस समूह में शामिल हैं। यह विविधता इस बात का प्रमाण है कि नक्सल संगठन की जड़ें अब कई स्तरों पर कमजोर पड़ रही हैं और आम लोगों के बीच सरकार की पहुंच तथा भरोसा बढ़ रहा है।

बीजापुर में पिछले महीनों में नक्सल उन्मूलन अभियान ने अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। आंकड़े बताते हैं कि 1 जनवरी 2025 से अब तक जिले में 528 माओवादी गिरफ्तार किए गए, 560 ने आत्मसमर्पण किया और 144 मुठभेड़ों में मार गिराए गए। यह आँकड़े किसी सामान्य अभियान के नहीं बल्कि एक गहरे बदलाव के संकेत हैं। पूरे छत्तीसगढ़ में वर्ष 2024 से अब तक 790 माओवादी मुख्यधारा में लौट आए, 1031 गिरफ्तार हुए और 202 विभिन्न मुठभेड़ों में मारे गए। यह वह तस्वीर है जिसे सुरक्षा बलों ने वर्षों की मेहनत, रणनीति, तकनीकी निगरानी और स्थानीय समुदायों के भरोसे से हासिल किया है।

बीजापुर में मंगलवार का दृश्य किसी साधारण पुलिस कार्यक्रम जैसा नहीं था। आत्मसमर्पण करने आए माओवादी थके हुए, धूल से सने, वर्षों के संघर्ष से कमजोर लेकिन मन से आश्वस्त दिख रहे थे। उनके हाथों में बंदूकें थीं लेकिन आंखों में एक नया भविष्य। कई महिला माओवादी अपने चेहरों पर घूंघट जैसा कपड़ा डाले एक ओर खड़ी थीं, लेकिन उनकी आंखों में यह राहत साफ झलक रही थी कि अब उन्हें जंगलों में बंदूक की आवाज़ के बीच नहीं, बल्कि अपने घरों में परिवार की आवाज़ के साथ जीने का मौका मिलेगा।

शासन और प्रशासन की रणनीति अब संवाद, विकास और विश्वास पर केंद्रित है। सड़कें बन रही हैं, अस्पतालों तक पहुंच आसान हो रही है, शिविरों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं बढ़ाई जा रही हैं। यह सिर्फ नीतियों का परिणाम नहीं, बल्कि आम ग्रामीणों के सहयोग की जीत है, जिन्होंने अब हिंसा की जगह शांति की राह स्वीकार कर ली है।

बीजापुर की इस अभूतपूर्व घटना ने यह साफ कर दिया है कि नक्सलवाद खत्म करने का रास्ता केवल गोली और मुठभेड़ नहीं है। कभी-कभी बदलाव तब आता है जब हथियार थक जाते हैं और उम्मीद मजबूत हो जाती है।

समंदर की बेचैनी बढ़ी, श्रीलंका ने बंगाल की खाड़ी में मछली पकड़ने पर लगाया पूरा प्रतिबंध, तटीय इलाकों में बढ़ी सतर्कता

(जीएनएस)। कोलंबो की सुबह उस दिन कुछ अलग थी। समुद्र की ओर बहती हवा में नमी भी थी और एक हल्की-सी बेचैनी भी, मानो लहरें खुद किसी आने वाले खतरे की फुसफुसाहट कर रही हों। इसी बीच श्रीलंका के मत्स्य पालन और जलीय संसाधन विभाग ने एक ऐसा आदेश जारी किया जिसने तटीय समुदायों का दिल धड़का दिया—बंगाल की खाड़ी में मछली पकड़ने की सभी गतिविधियों पर अगले आदेश तक पूर्ण प्रतिबंध।

यह कदम अचानक नहीं उठा। पिछले कई दिनों से मौसम विभाग समुद्र में बन रहे कम दबाव वाले क्षेत्र की चेतावनियाँ दे रहा था। समुद्र की गहराइयों में उठती हलचल ने यह स्पष्ट कर दिया था कि खतरा सिर्फ लहरों तक सीमित नहीं रहेगा। विभाग ने कहा कि यह निर्णय मछुआरों की सुरक्षा और समुद्री जोखिमों को देखते हुए अनिवार्य था, क्योंकि समुद्र ऐसी अवस्था में पहुँच चुका है जहाँ उसकी हर आहट, हर लहर संभावित संकट का संकेत दे रही है।

डेली न्यूज़ की रिपोर्ट बताती है कि समुद्र में मौजूद हर नाव, हर ट्रॉलर को तुरंत वापस लौटने का आदेश मिल चुका है। रेडियो पर लगातार संदेश प्रसारित किए जा रहे हैं। तटीय चौकियों से सायरन की आवाज़ें उठ रही हैं। हर मछुआरा जानता है कि समुद्र उन्हें पालता भी है और डरा भी सकता है—और आज वह डर अधिक वास्तविक है।

श्रीलंकाई मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, 25 नवंबर की आधी रात से बंगाल की खाड़ी के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में एक कम दबाव सक्रिय है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगले 30 घंटों में यह कम दबाव डिप्रेशन में बदल सकता है। यह वह अवस्था होती है जब समंदर का तापमान, हवा की दिशा और दबाव का उतार-चढ़ाव तूफ़ान की पहली सीढ़ी बन जाता है।

विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि यह डिप्रेशन आगे चलकर चक्रवात का रूप भी ले सकता है। समुद्र में हवा की रफ्तार 31 से 61 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुँच सकती है—और समुद्री दुनिया में यह गति सिर्फ हवा नहीं, बल्कि खतरनाक परिस्थिति का रूप है। नावें उलट सकती हैं, ट्रॉलर डूब सकते हैं और कई किमी दूर तक लहरें उफान मार सकती हैं।

तटीय इलाकों में अब सतर्कता बढ़ गई है। मछुआरों के घरों में बेचैनी है—क्योंकि काम रुक गया है, समुद्र बंद हो गया है और भविष्य अनिश्चित लगता है। लेकिन उनके मन में यह भी है कि समुद्र की नाराज़गी का सामना करने का मतलब अपने जीवन को खतरे में डालना है।

सरकार ने तटीय समुदायों से अपील की है कि वे मौसम विभाग की हर चेतावनी पर ध्यान दें, अफवाहों से दूर रहें और किसी भी परिस्थिति में समुद्र की ओर न जाएँ।

बंगाल की खाड़ी फिलहाल शांत नहीं है—उसकी सतह पर जो लहरें उठ रही हैं, वे सिर्फ पानी की लहरें नहीं, बल्कि आने वाले समय का संकेत हैं। इस खाड़ी के किनारों पर रहने वाले लाखों लोगों की दुआ यही है कि यह कम दबाव बिना किसी बड़े प्रहार के समंदर की गहराइयों में ही विलीन हो जाए।

शेख हसीना के लॉकरों से बरामद 9.7 किलो सोना और विदेशी उपहारों ने हिला दिया बांग्लादेश का सियासी परिदृश्य

(जीएनएस)। ढाका की चहल–पहल भरी सुबह उस दिन कुछ अलग थी। सड़कें अपने सामान्य स्वर में ही बह रही थीं, लेकिन शहर के ऊपर एक हल्का-सा तनाव तैर रहा था—मानो हवा भी जानती हो कि आज बांग्लादेश की राजनीति का एक और अध्याय खुलने वाला है। शेख हसीना, जो दशकों तक बांग्लादेश की सत्ता के सबसे मजबूत स्तंभों में से एक रहीं, अब अपदस्थ थीं। अदालत की कठोर सजा और अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण–1 का फैसला देश की राजनीति में भूचाल ला चुका था। उसी फैसले की प्रतिच्छाया अब उनके जीवन के उन हिस्सों पर पड़ने लगी थी, जिनके बारे में आम नागरिक केवल कल्पना कर सकते थे—उनकी निजी संपत्तियाँ, उनके बैंक लॉकर और वर्षों से बंद तिजोरियों में सोए रहस्य। अंतरिम सरकार ने निर्देश दिया कि उनकी संपत्तियों को तुरंत जब्त किया जाए और हर दस्तावेज़, हर ताला, हर लॉकर की जाँच की जाए। मोतीझील स्थित अग्रणी बैंक की मुख्य शाखा उस दिन सुरक्षा और गोपनीयता की चादर में लिपटी हुई थी। बैंक की ठंडी तिजोरी में खड़े अधिकारी चुपचाप दो लॉकरों—751 और 753—के सामने खड़े थे। धातु की ठंडी सतह पर हल्की रोशनी पड़ रही थी, और वातावरण में एक अनकही गंभीरता तैर रही थी। अधिकारी जब ताले खोलने आगे बढ़े, तो उस हल्की-सी क्लिक की आवाज़ ने पूरे कमरे का मौन भंग कर दिया। लॉकर खुलते ही जो चमक बाहर आई वह सिर्फ सोने की नहीं, बल्कि उन वर्षों की थी जिनमें सत्ता अपनी पूरी गरिमा के साथ चमकती है और अपने साथ कई कहानियाँ समेटती चलती है।

लॉकरों से कुल 832.51 भोरी सोना, यानी लगभग 9.704 किलोग्राम के आभूषण निकले—हार, कंगन, चूड़ियाँ, झुमके, ब्रोच, पैजाब और कई बहुमूल्य डिज़ाइनों के गहने। धातु की उस पीली चमक में सत्ता का भार साफ दिखाई देता था।

इतना ही नहीं, तिजोरी से देश–विदेश में मिले अनेक सम्मान, ट्रॉफियाँ, स्मृति–चिह्न, राजकीय उपहार और पुरस्कार भी निकले—कुछ महंगे, कुछ ऐतिहासिक, और कुछ ऐसे जिन्हें केवल वही समझ सकता है जिसने वर्षों तक सत्ता के केंद्र में बैठकर हर मंच, हर यात्रा और हर संभाषण के चमकते क्षणों को जिया हो।

नेशनल बोर्ड ऑफ़ रेवेन्यू का सेंट्रल इंटेलिजेंस सेल इन सभी वस्तुओं का सूचीकरण कर रहे अधिकारियों को देख रहा था। हर गहना, हर ट्रॉफी, हर विदेशी उपहार कहीं न कहीं यह बयां कर रहा था कि कैसे सत्ता अपने आसपास एक अलग संसार बना लेती है—जो आम नागरिक की नज़रों से हमेशा दूर रहता है।

उसी दिन एक अन्य बैंक—पुबाली बैंक—में हसीना के नाम दर्ज एक और लॉकर खोला गया, लेकिन वहाँ केवल खाली खामोशी थी। कोई आभूषण नहीं, कोई दस्तावेज़ नहीं—मानो किसी समय यह लॉकर महत्वपूर्ण रहा हो, लेकिन अब इतिहास की फाइलों में बस एक संख्या बनकर रह गया है।

बांग्लादेश में सोने की पारंपरिक माप 'भोरी' में तौली जाती है—11.664 ग्राम की एक भोरी। इस इकाई में केवल धातु का वजन नहीं होता, बल्कि वर्षों की परंपरा और सामाजिक मूल्य जुड़ा होता है। इसलिए जब अधिकारियों ने कहा कि हसीना के लॉकरों से 832 भोरी सोना मिला है, तो पूरे देश में यह संख्या एक प्रतीक बन गई—सत्ता की, संपत्ति की, और उस राजनीतिक यात्रा की जो अब कठोर जाँच के घेरे में है।

सरकारी एजेंसियाँ बता चुकी हैं कि यह प्रक्रिया अभी समाप्त नहीं हुई है। आने वाले दिनों में शेख हसीना की शेष संपत्तियों की भी जाँच और जब्ती जारी रहेगी। उनके घर, कार्यालय, भूमि, निवेश—सबकी सूची बन रही है। हर नए दस्तावेज़ से कोई न कोई सवाल उठता है, और हर नई बरामदगी के साथ बांग्लादेश का सियासी तापमान थोड़ा और बढ़ जाता है।

ढाका की जनता आज केवल सोने की मात्रा नहीं पढ़ रही, बल्कि उस कहानी को समझ रही है जिसमें एक प्रधानमंत्री की सत्ता, उनके निजी खज़ाने, और उनके पतन की धूलें इतिहास के पन्नों पर बिखरने लगी हैं। बांग्लादेश की राजनीति का यह अध्याय आने वाले समय में बहुत लंबे समय तक चर्चाओं का केंद्र बनेगा—क्योंकि इसमें सिर्फ सोना नहीं, बल्कि सत्ता का अनकहा भार भी छिपा है।

हाईवे पर देर रात चीखों का सन्नाटा, ट्रक–स्कॉर्पियो की भयानक भिड़ंत में दो सैन्य जवानों समेत पांच लोगों की मौत से दहल उठा जांजगीर-चांपा

(जीएनएस)। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले की शांत रात मंगलवार को अचानक एक भयावह धमाके और दिल दहला देने वाली चीखों से टूट गई, जब नेशनल हाईवे-49 पर ग्राम सुकली के पास तेज रफ्तार ट्रक और स्कॉर्पियो की आमने-सामने टक्कर ने पांच जीवन एक पल में छीन लिए। जिन सड़कों पर दिनभर खेतों की हवा और गांवों की आवाजें गूंजती रहती हैं, वहां देर रात धुएं, मलबे, टूटी हड्डियों और सिसकियों की एक दर्दनाक तस्वीर उभर आई। देर रात लगभग वह समय था जब स्कॉर्पियो में सवार आठ लोग एक बारात समारोह से लौट रहे थे। शादी की खुशियों, ढोल-ताशों और रोशनी की चमक से भरी शाम अब थकान के साथ अपने-अपने घरों की ओर बढ़ रही थी। किसी को अंदाजा भी नहीं था कि लौटते हुए रास्ते में कुछ ही मिनटों में ऐसी त्रासदी उनकी प्रतीक्षा कर रही है, जो कई परिवारों की खुशियां हमेशा के लिए छीन लेगी। सामने से तेज गति में आ रहा एक ट्रक अचानक नियंत्रण से बाहर हुआ या स्कॉर्पियो ने किसी मोड़ पर गति खो दी—जांच अभी जारी है—लेकिन टक्कर इतनी भीषण थी कि स्कॉर्पियो के परखच्चे हवा में उड़ गए। वाहन के दरवाजे चकनाचूर होकर सड़क में इधर-उधर बिखर गए, इंजन सड़क पर घिसटता हुआ कई फीट दूर जा रुका और अंदर बैठे लोग झटके की भयावहता से सीटों के बीच फंस गए। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि टक्कर के बाद कुछ क्षणों के लिए ऐसा लगा जैसे पूरा इलाका फट पड़ा हो। आवाज सुनकर आसपास के घरों से लोग दौड़ पड़े। मलबे में फंसे घायलों की चीखें हवा में गूंज रही थीं। किसी ने मोबाइल की रोशनी से रास्ता बनाया, किसी ने दरवाजों को तोड़ने की कोशिश की, तो कोई पानी लेकर घायलों को सहारा दे रहा था। कुछ ग्रामीणों ने तुरंत पुलिस और एंबुलेंस को फोन किया और पूरी रात जिस हाईवे पर शायद ही कोई आवाज होती थी, वहां इस दारुण हादसे की कहानी चंद मिनटों में फैल गई। जब पुलिस, एंबुलेंस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे, तब तक स्कॉर्पियो की स्थिति इतनी खराब थी कि कई शवों को बाहर निकालने के लिए वाहन के हिस्सों को गैस कटर से काटना पड़ा। मरने वालों में दो सैन्य जवान—राजेंद्र कश्यप (27) और पोमेश्वर जलतारे (33)—भी शामिल थे, जो अपने परिवारों से छोटी सी छुट्टी में शामिल होने आए थे और विवाह समारोह में शिरकत करने के बाद घर लौट रहे थे। देश की रक्षा करने वाले ये जवान जिस सड़क पर अक्सर छुट्टियों में अपने गांवों की ओर जाते थे, वही सड़क उनका अंतिम सफर बन गई। इनके साथ ही विश्वनाथ देवागन (43), भूपेंद्र साहू (40) और कमलनयन साहू (22) की जान भी चली गई, जिनके परिवार अब इस अचानक आए तूफान से स्तब्ध हैं।

हादसे के बाद मौके का दृश्य किसी अकल्पनीय आपदा से कम नहीं था—टूटी चप्पलें, सड़क पर बिखरा कांच, गाड़ियां रोककर खड़े लोग, किसी को फोन पर सूचना देते हुए रोते परिजन, और हर तरफ खून और डरे हुए चेहरे।

तीन घायल यात्रियों की हालत नाजुक थी, जिन्हें पहले स्थानीय अस्पताल में प्राथमिक उपचार दिया गया। वहां से स्थिति गंभीर होने के कारण तुरंत बिलासपुर रेफर कर दिया गया। डॉक्टरों के अनुसार सभी घायलों को सिर पर भारी चोटें और कई जगह फ्रैक्चर हैं। पुलिस ने रात में ही सभी शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और सुबह से हादसे की विस्तृत जांच शुरू कर दी है।

नेशनल हाईवे-49 पर तेज रफ्तार, ट्रकों का दबाव और रात के समय दृश्यता में कमी पहले भी कई दुर्घटनाओं की वजह बनी है, लेकिन मंगलवार की यह दुर्घटना जांजगीर-चांपा जिले के लोगों को भीतर तक हिला गई है। शादी की खुशी लौटते हुए एक पल में मातम में बदल गई।

ट्रंप की शांति पहल पर यूक्रेन ने लगाई मुहर, अब रूस की मंजूरी पर टिकी दुनिया की नज़र

(जीएनएस)। रूस और यूक्रेन के बीच लगभग तीन साल से जारी युद्ध के बीच आखिरकार पहली बार ऐसा क्षण आया है, जिसे वास्तविक शांति की ओर बढ़ता हुआ निर्णायक मोड़ कहा जा सकता है। वाशिंगटन से मिली अहम जानकारी के मुताबिक, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा तैयार किए गए प्रस्तावित शांति समझौते के मसौदे को यूक्रेन ने औपचारिक रूप से स्वीकार कर लिया है। यह वही मसौदा है, जिसके लिए पिछले कई महीनों से पर्दे के पीछे कूटनीति का बेहद जटिल खेल चल रहा था। अमेरिकी अधिकारियों ने पुष्टि की है कि मसौदे के प्रारंभिक चरण में उठे लगभग सभी विवादित बिंदुओं पर आपसी सहमति बन चुकी है। अब पूरी दुनिया की निगाहें रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और उनकी अगली प्रतिक्रिया पर टिकी हैं, क्योंकि यह समझौता तभी आगे बढ़ पाएगा जब रूस भी इसे अपनी स्वीकृति देगा। अमेरिका और यूक्रेन के बीच हुई तीव्र बातचीत की पुष्टि यूक्रेन के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार रुस्तम उमरोव ने भी की है, जिन्होंने यह भी संकेत दिया कि जैसे ही अंतिम औपचारिकताएं पूरी होंगी, राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की नवंबर के अंत तक अमेरिका की यात्रा करके निर्णायक दौर की बातचीत में शामिल हो सकते हैं। इस बीच Washington में यह चर्चा तेज है कि राष्ट्रपति ट्रंप इस यात्रा के दौरान जेलेंस्की के साथ बैठकर उस अंतिम मसौदे को आकार देना चाहेंगे, जो दोनों देशों को युद्ध की समाप्ति और स्थायी शांति की दिशा में ले जाएगा।

दूसरी ओर, अमेरिकी रक्षा सचिव डैन ड्रिस्कॉल ने अबू धाबी में रूसी अधिकारियों से एक महत्वपूर्ण मुलाकात की है। बताया जाता है कि यह बैठक किसी नई रणनीति का संकेत नहीं, बल्कि चल रही शांति प्रक्रिया के बेहद संवेदनशील चरण का हिस्सा थी। इसी बीच राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा कि अब केवल "कुछ ही मुद्दों" पर दोनों पक्षों के बीच बात चल रही है और वह उम्मीद करते हैं कि जल्द ही स्थिति पूरी तरह स्पष्ट हो जाएगी। उनके विशेष दूत स्टीव विटकॉफ को मास्को भेजा जा रहा है, जहां वे रूसी शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात कर अंतिम बिंदुओं को सुलझाने का प्रयास करेंगे।

उधर ट्रंप प्रशासन के भीतर भी यह तैयारी शुरू हो चुकी है कि किस प्रकार जेलेंस्की और पुतिन को एक ही मेज पर लाया जा सके। इस कोशिश में उप राष्ट्रपति जेडी वेंस, विदेश सचिव मार्को रुबियो, युद्ध सचिव पीट हेगसेथ और व्हाइट हाउस की चीफ ऑफ स्टाफ सूजी विल्स सीधे तौर पर शामिल बताए जाते हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि इतिहास में पहली बार अमेरिका ऐसा माहौल बनाने में सफल हो सकता है, जिसमें दोनों कट्टर विरोधी एक तटस्थ मंच पर आमने-सामने बैठकर बातचीत के लिए तैयार हों। रूस की ओर से भी कुछ सकारात्मक संकेत मिले हैं। राष्ट्रपति कार्यालय के विदेशी मामलों के सलाहकार यूरी उशाकोव ने पुष्टि की है कि विटकॉफ और उनका प्रतिनिधिमंडल इस महीने के अंत तक मॉस्को पहुंचेंगे। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने अमेरिका की मध्यस्थता की सराहना करते हुए कहा है कि रूस शांति चाहता है, लेकिन किसी भी दस्तावेज़ को अंतिम रूप देने से पहले उसके सभी प्रावधानों को गहराई से परखेगा और केवल हस्ताक्षर के बाद ही उसे सार्वजनिक किया जाएगा। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने सोशल मीडिया पर यह लिखकर वैश्विक उम्मीदों को और बढ़ा दिया कि पिछले सप्ताह रूस और यूक्रेन को एक ही वार्ता–मेज पर लाकर "अभूतपूर्व प्रगति" हासिल की गई है।

संपादकीय

शहादत का स्मरण

भले ही श्रीलंकाई संकट के समाधान हेतु भारतीय शांति सेना को श्रीलंका भेजा जाना तत्कालीन सरकार का फैसला रहा हो, लेकिन वास्तव में भारतीय सैनिक राष्ट्र के हितों और सैन्य दायित्वों के लिये ही लड़े थे। इस फैसले का उद्देश्य श्रीलंकाई तमिलों के हितों की रक्षा और उनके न्यायसंगत पुनर्वास के लिये पहल करना भी रहा है। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि भारतीय शांति सेना यानी आईपीकेएफ के पूर्व सैनिकों में इस बात को लेकर लंबे समय से रोष व्याप्त रहा है कि आईपीकेएफ सैनिकों के बलिदान को उचित सम्मान नहीं दिया गया। अब सरकार व सेना ने इस कमी को पूरा करने की दिशा में कम से कम एक पहल तो की है। सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी द्वारा राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर परमवीर चक्र विजेता मेजर रामास्वामी परमेश्वरन को उनके बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करना, इस दिशा में एक महत्वपूर्ण क्षण था। देश के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भी इस बाबत श्रद्धांजलि संदेश प्रेषित किया है। भले ही शीर्ष अधिकारियों द्वारा की गई यह पहल एक प्रतीकात्मक सुधार हो, लेकिन यह सही दिशा में उठाया गया सार्थक कदम है। हालांकि देर से ही सही, ये प्रयास श्रीलंका में ऑपरेशन पवन के दौरान शहीद हुए 1,171 भारतीय सैनिकों को उचित सम्मान देने में रही एक कमी को दूर करने का प्रयास कहा जा सकता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस युद्ध में करीब तीन हजार से ज्यादा सैनिक घायल भी हुए थे। इससे पूर्व कई वीर सैनिकों को वीरता पदक से सम्मानित भी किया जा चुका है। लेकिन एक टीस के साथ कहा जाता रहा है कि यह अकसर भुला दिया जाने वाला युद्ध रहा है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि कोलंबो में भारतीय शांति रक्षक सेना और पलाली में 10-पैरा के शहीदों के लिये स्मारक का निर्माण किया गया था। यह विडंबना ही है कि आईपीकेएफ के पूर्व सैनिक, शहीदों की विधवाएं और उनके परिजन राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर निजी स्तर पर स्मरणोत्सव आयोजित करते रहे हैं। निश्चित ही देश के हितों के लिये चलाये गए किसी भी सैन्य अभियान में शहीद हुए सैनिकों को सामान्य युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की तरह पर्याप्त सम्मान मिलना चाहिए।

दरअसल, ऑपरेशन पवन में शहीद हुए सैनिकों के परिजन और युद्ध में भाग लेने वाले जवान भी उन्हें पर्याप्त सम्मान दिए जाने की आस लंबे समय से रखते रहे हैं। वर्षों से उनकी मांग रही है कि साल 1971 में बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम और वर्ष 1999 में हुए कारगिल युद्ध के शहीदों की याद में मनाये जाने वाले खास दिनों की तरह 'ऑपरेशन पवन' की याद में भी एक विशेष दिन की घोषणा की जानी चाहिए। वहीं दूसरी ओर शहीद सैनिकों के परिजनों की एक टीस उन्हें दशकों से सालती रही है। चूंकि ऑपरेशन पवन में शहीद हुए कई सैनिकों का अंतिम संस्कार या दफनाने की प्रक्रिया विदेशी धरती पर पूरी हुई थी, इसलिए उनके परिजन शहीद सैनिकों के अवशेषों को वापस भारत लाने की नीति को सुव्यवस्थित करने की मांग करते रहे हैं। वे एक ऐसे आयोग के गठन की भी मांग करते रहे हैं जो शहीद सैनिकों के पार्थिव अवशेष को वापस भारत लाने की नीति को तार्किक बना सके। उनकी मांग रही है कि उन अवशेषों को भारत लाकर आईपीकेएफ का एक स्मारक बनाकर, उसमें सम्मान के साथ स्थानांतरित किया जाना चाहिए। निस्संदेह, किसी भी देश के वीर शहीदों के स्मारक सामूहिक स्मृति के प्रतीक होते हैं। निश्चित रूप से राष्ट्रीय युद्ध स्मारक सशस्त्र बलों द्वारा दिए गए बलिदान के लिये एक सम्मान और स्मरण स्थल के रूप में चिरस्थायी श्रद्धांजलि के रूप में होते हैं। निर्विवाद रूप से इस बहुप्रतीक्षित मांग को हकीकत में बदलने के लिये चाहे कितनी भी जटिलताएं क्यों न हो, सैनिकों के पराक्रम और बलिदान को कम करके आंकने का कोई बहाना नहीं होना चाहिए। यदि हम वीर सैनिकों के बलिदान को समुचित सम्मान देते हैं तो इससे तमाम सैनिकों का मनोबल बढ़ेगा। इस दिशा में अविलंब सार्थक पहल किया जाना वक्त की जरूरत ही है।

भर गये सदियों के घाव, आस्था का हो रहा विजयगान, केसरिया ध्वज लहराते ही नया युग शुरु

> ध्वजारोहण का आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं रहा; यह उन अनेकों साधना-यात्रियों, संतों, पुरोहितों, शिल्पकारों, वास्तुकारों, अनुगामियों, श्रमिकों और दानदाताओं की कहानियों का संगम रहा जिनकी तपस्या और त्याग भारत के इतिहास में विशेष स्थान रखते हैं।

अयोध्या की धरती पर एक ऐसा क्षण उत्पन्न हुआ जो केवल ईंट-पत्थर और वास्तुकला का नहीं, बल्कि पीढ़ियों की आस्था, अनवरत संकल्प और सामूहिक स्मृति का साक्षी बना। जब केसरिया धर्मध्वज गर्व से श्रीराम जन्मभूमि के शिखर पर लहरा उठा, तो वह केवल एक ध्वज नहीं था— वह सैकड़ों वर्ष के अरसे से बँधी हुई वेदना का, अटूट विश्वास का और उन अनगिनत लोगों के संघर्ष का प्रतीक बन गया जो इस पवित्र भूमि को पुनः उसकी गरिमा प्रदान करने के लिये अग्रसर थे। विवाह पंचमी के अभिजीत मुहूर्त पर, वैदिक मंत्रों की गूँज और 'जय श्रीराम' के उद्घोष के बीच जो आराधना हुई, वह व्यक्तिगत श्रद्धा से ऊपर उठकर राष्ट्र के सांस्कृतिक स्मरण का साझा अनुष्ठान बन गई। मंदिर के चारों ओर निर्मित परकोटे की शिल्पकला, मुख्य मंदिर की दीवारों पर उकेरे गए 87 प्रसंग और कॉपर-शिल्प की 79 समृद्ध झांकियाँ, यह सब केवल स्थापत्य कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि रामकथा के विविध आयामों का मूर्त रूप हैं जो हमारी परंपरा की बहुरंगी विविधता को दर्शाते हैं।

यह आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं रहा; यह उन अनेकों साधना-यात्रियों, संतों, पुरोहितों, शिल्पकारों, वास्तुकारों, अनुगामियों, श्रमिकों और दानदाताओं की कहानियों का संगम रहा जिनकी तपस्या और त्याग भारत के इतिहास में विशेष स्थान रखते हैं। जिन लोगों ने वर्षों, दशकों तक अपनी ऊर्जा समर्पित की, वह आज जहां भी रहे हों, उनके मन में आज निश्चित रूप से आत्म-संतोष का भाव रहा होगा। साधु-संतों की भक्ति-भाषाएँ, श्रद्धालुओं की भीड़ और नगरवासियों की आतिथ्य-भावना ने भी यह प्रमाणित किया कि आस्था और सामूहिक विश्वास किस तरह किसी स्थान की आत्मा को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

नया ध्वजारोहण केवल अतीत का जश्न नहीं है; यह भविष्य की दिशा का संकेत भी है। आज की अयोध्या, जहाँ प्राचीन रामकथा और आधुनिक योजनाओं का अप्रत्याशित संगम दिख रहा है, वह इस बात का उदाहरण है कि विरासत और विकास साथ-साथ फल-फूल सकते हैं। महर्षि वाल्मीकि हवाई अड्डे से लेकर आधुनिकीकरण किए गए रेलवे टर्मिनलों, रामपथ और भक्ति-पथ तक, ये सब उस दृष्टि का हिस्सा हैं जो तीर्थ को वैश्विक रूप से सुलभ, सुरक्षित और आदर्श-आधारित बनाने की कल्पना करती है।

इस पवित्र क्षण पर, हमें उन अनगिनत नामरहित कर्मयोगियों को भी याद करना चाहिए जिनका श्रम बिना किसी प्रचार-प्रसार के मंदिर निर्माण को साकार करने में सहायक रहा। वे श्रमिक जिनके हाथों ने पत्थरों को संवारा; वे शिल्पकार जिनकी कला ने कथानक को जीवन दिया; वे पुरोहित, संत और पंडित जिनके अनुष्ठानिक ज्ञान ने मार्ग दिखाया; और वे स्वयं सेवक व आयोजक जिनकी रात-दिन की मेहनत ने समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की, इन सबका आभार केवल शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता। इसके साथ ही राम मंदिर आंदोलन के नेतृत्वकर्ताओं, भागीदारों तथा श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के संकल्प को सिद्ध करने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतिबद्धता के बिना आज के इस दिन की कल्पना करना संभव नहीं था।

आज, उन समुदायों और परिवारों का भी अभिवादन आवश्यक है जो शांतिपूर्ण और संयत भाव से इस ऐतिहासिक आयोजन का हिस्सा बने रहे। भीड़ के उत्साह में जो संयम और अनुशासन दिखा, वह सामाजिक सहिष्णुता और साझा गर्व का प्रतीक था। संतों के भावपूर्ण शब्दों ने इस क्षण को दैवीयता का अनुभाव बना दिया और भक्तों की आशा-आभा ने यह संकेत दिया कि यह भूमि अब एक नए अध्याय में प्रवेश कर रही है— जहाँ आध्यात्मिकता और सामाजिक विकास साथ-साथ आगे बढ़ने का वादा करते हैं। आज का दिन हमें यह भी संदेश देता है कि किसी भी महान लक्ष्य की पूर्ति के लिये संकल्प, सहनशीलता और सामूहिक भागीदारी अनिवार्य हैं।

बहरहाल, जब केसरिया ध्वज आकाश में लहरा रहा था, तब उसके साथ एक नयी आशा भी ऊँची हुई कि यह स्थान उन मूल्यों का प्रसार भी करेगा जो व्यक्ति को नैतिक, दयालु और समाज-प्रेरित बनाते हैं। अयोध्या की यह गाथा निश्चित रूप से आने वाली पीढ़ियों को श्रद्धा, सेवा, समर्पण और साझा-सपनों के लिये प्रेरित करेगी। जय श्रीराम।

प्रेरणा

यह साल भी छुट्टियों के सपनों का था

साल की आखिरी हवा जब धीरे-धीरे ठंडी होने लगती है और आसमान में बादल ऐसे तैरते हैं जैसे कोई विशाल कैलेंडर बदलने की तैयारी कर रहा हो, तभी लोगों के मन में अगले साल की छुट्टियों का एक अदृश्य संगीत बजना शुरू हो जाता है। मोबाइल खोलते ही न्यू ईयर पार्टी के विज्ञापन तिरछी मुस्कान के साथ सामने आते हैं, होटल और रिसॉर्ट अपनी चमकदार रोशनी में बुलावा देने लगते हैं, और पूरा समाज जैसे छुट्टियों की गणित में खो जाता है। कैलेंडर अभी दीवार पर टँगा नहीं होता, लेकिन छुट्टियों के नर्म-नर्म सपने मन की दीवारों पर चॉक से लिखे जाने लगते हैं।

सरकारी नौकरी वालों के घरों में यह मौसम किसी त्योहार से कम नहीं होता। जिन परिवारों में पति-पत्नी दोनों सरकारी सेवा में हों, वहाँ छुट्टियों की सूची किसी खजाने के नक्शे जैसी लगती है। हर छुट्टी एक सोने का सिक्का, हर त्योहार एक सजीव खिड़की जिससे बाहर निकलकर जीवन कुछ पल के लिए आज़ाद साँस ले सके। पोस्टिंग अगर घर के पास हो, तो जीवन इतना सरस हो जाता है कि आँगन में तुलसी की तरह संतोष अपने आप उगने लगता है। और जब पोस्टिंग की व्यवस्था धन, संपर्क, प्रयास और भाग्य के मेल से मनचाही जगह पर हो जाए, तो ऐसा लगता है कि दुनिया में इससे आसान और सुखकर जीवन कोई दूसरा नहीं।

हमारे समाज का चलन भी कुछ ऐसा है कि जिन परिवारों में कोई सरकारी नौकरी वाला न हो, उन्हें सामाजिक सीढ़ी पर थोड़ा नीचे मान लिया जाता है। यह धारणा लोगों ने बिना कुछ कहे अपने मन में ऐसे बसा ली है जैसे घर में रखी वह पुरानी परंपरा जिसे कोई बदलता नहीं, बस निभाता चलता है। बच्चे बड़े होते हैं और उन्हें पढ़ाई से पहले यह शिक्षा मिलती है कि किसी भी तरह सरकारी नौकरी में पहुँचो—कोचिंग, किताबें, कोटा, शहर, पसीना—सब उन्हीं सपनों के इर्द-गिर्द घूमने लगता है। निजीकरण के इस दौर में भी पक्की नौकरी की चाह वैसी ही अटल है जैसे बरगद का पेड़ पृथ्वी की पकड़ छोड़ने को तैयार ही न हो।

जब अख़बार में अगले साल की छुट्टियों की सूची छपती है, तो कई परिवारों में सुबह की चाय उस पन्ने के साथ ही पी जाती है। मानो जीवन की मिठास इस बात पर निर्भर हो कि वह छुट्टियों का एक पन्ना क्या कह रहा है। लोगों की आँखों में चमक आ जाती है—यहाँ घूमेंगे, वहाँ जाएंगे, इस दिन आराम, उस दिन पूजा। लेकिन जैसे ही पता चलता है कि दिवाली जैसे बड़े त्योहार रविवार को पड़ रहे हैं, दिल में हल्की-सी चोट लगती है। रविवार का त्योहार, जैसे किसी ने मेज़ पर रखी हुई मिठाई दिखाकर कह दिया हो कि यह तो पहले से तुम्हारा ही था।

कई छुट्टियाँ वैकल्पिक अवकाश के रूप में रविवार पर आती हैं, और लोग इस बात से ऐसे दुखी होते हैं जैसे कोई पुस्तक पढ़ने बैठें और पहले ही पन्ने पर पता चले कि कहानी का अंत तो पहले से ही छप चुका है। लेकिन जब छुट्टी शुक्रवार या शनिवार पर हो, तब जीवन में एक अनकही खुशी आ जाती है। एक अतिरिक्त दिन जोड़कर कोई छोटा-सा सफ़र बनाना आसान हो जाता है। बच्चे हँसते हैं, माँ-पिता सुकून की लंबी साँस लेते हैं, और घर में जैसे एक हल्की-सी रंगत भर जाती है।

अगर कोई छुट्टी शनिवार या सोमवार को पड़े, तो दफ्तर जाने वाले लोगों के कदम भी थोड़े हल्के हो जाते हैं। लेकिन दूसरी शनिवार वाली छुट्टी पर त्योहार पड़ जाए, तो उसका असर ऐसा होता है जैसे किसी बंद कमरे में रोशनी की किरण आने से पहले ही खिड़की बंद कर दी गई हो।

अगले साल तीन राष्ट्रीय अवकाश वही अपरिवर्तित सत्यम् की तरह हैं। बाकी उन्नीस छुट्टियाँ धार्मिक और सांस्कृतिक रंगों में लिपटी हुई हैं। देश के कुछ राज्यों में तो छुट्टियों की संख्या तीस तक पहुँच जाती है। इतना अवकाश, जैसे समय ने खुद हाथ जोड़ लिया हो और कह रहा हो—लो, जीवन जीने का समय है।

कई होशियार लोग कहते हैं कि अगर त्योहार रविवार को पड़ता है, तो उसकी छुट्टी किसी और दिन घोषित होनी चाहिए—शायद सोमवार को—क्योंकि रविवार पहले से ही सबका अपना होता है। कर्मचारी सुबह से शाम तक काम करते हैं, कसम खाई हुई समयसीमा में पिसते रहते हैं, लेकिन छुट्टियों की व्यवस्था इतनी कठोर क्यों? सरकार जब मनमर्जी से हजारों निर्णय ले लेती है, तो छुट्टियों का थोड़ा-सा फेरबदल भी क्यों न कर ले? इससे कर्मचारी खुश, उनके परिवार खुश, और सरकार के वोट भी पक्के।

हो सकता है आने वाले वर्षों में छुट्टियों के प्रबंधन की यह बहस और भी बढ़े। लोग तर्क देंगे, सुझाव देंगे, और सरकारें शायद कभी इस दिशा में कुछ नया सोचें। आखिर छुट्टियाँ केवल कैलेंडर पर छपे दिन नहीं होतीं। ये जीवन का संगीत होती हैं—वह संगीत जो लोगों के भीतर छुपे आनंद को जगाता है, परिवार को जोड़ता है, मन को शांत करता है और जीवन के बोझ को हल्का कर देता है।

इसी तरह हर साल, चाहे राजनीति कैसी भी हो, अर्थव्यवस्था कैसी भी हो, दुनिया कितनी भी बदल जाए, छुट्टियों की सूची आते ही लोग एक बार फिर से आशा, यात्रा, उत्सव और आराम के सपनों से भर जाते हैं। और शायद यही वह छोटी-सी खुशी है जो हर साल जीवन की एक नई, लेकिन परिचित कहानी लिख जाती है।

भारतीय संस्कृति में निहित कर्तव्यबोध की अभिव्यक्ति

छब्बीस नवंबर का दिन भारतीय गणतंत्र के इतिहास में केवल संविधान अंगीकरण का उत्सव भर नहीं है, यह उन मूलभूत मूल्यों के पुनर्स्मरण का अवसर भी है, जिन पर हमारे लोकतंत्र की आत्मा टिकी हुई है। भारतीय संविधान केवल विधिक प्रावधानों का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि एक नैतिक संकल्प है... एक ऐसी मूल्य-व्यवस्था का घोषणापत्र है जो देश, समाज और व्यक्ति के संबंधों को संतुलन, न्याय और कर्तव्य के ढांचे में देखती है। इसी संदर्भ में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संविधान की नैतिक चेतना का आधार-स्तंभ है। गीता का यह प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि दार्शनिक और नैतिक स्तर पर है। वह भारतीय मानस में सदियों से प्रवाहित उस दृष्टि का संहिताबद्ध रूप है, जिसने संविधान निर्माताओं की मूल्य-चेतना को आकार दिया।

संविधान की प्रस्तावना में 'न्याय', 'स्वतंत्रता', 'समानता' और 'बंधुत्व' जैसे शब्द केवल विधिक संकल्प नहीं हैं, बल्कि नैतिक मूल्यों का दार्शनिक प्रतिपादन हैं। यह मूल्य किसी बाहरी प्रभाव से नहीं आए, वे भारतीय परंपरा की लंबी साधना में विकसित हुए हैं। संविधान सभा की चर्चाओं में कई सदस्यों ने बार-बार यह रेखांकित किया कि संविधान की आत्मा को समझने के लिए भारतीय संस्कृति के मूल में निहित 'कर्तव्य-बोध' को देखना आवश्यक है। गीता का यह विशिष्ट योगदान है कि वह 'कर्तव्य' को किसी पुरस्कार, निजी-लाभ या भावनात्मक दबाव से ऊपर रखकर उसे समाज के प्रति उत्तरदायित्व के रूप में स्थापित करती है। यही दृष्टि आगे चलकर संविधान के 'भाग-4क' में नागरिकों के मूलभूत कर्तव्यों के रूप में प्रकट होती है। यद्यपि नागरिकों के मूलभूत कर्तव्यों को संविधान के बयालीसवें संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा बाद में जोड़ा गया था तथा इसे 3 जनवरी 1977 से लागू किया गया था।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अधिकांश स्वतंत्रता सेनानियों ने नैतिक राजनीति का जो प्रतिमान स्थापित किया था उसका केंद्र-बिंदु कर्तव्य, आत्मानुशासन व लोककल्याण था और वह गीता-दृष्टि से ही अनुप्राणित था। यहां ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि यही नैतिक विचार संविधान सभा के अधिकतर सदस्यों का भी मार्गदर्शन करता था।

जब संविधान में मूलभूत कर्तव्यों को शामिल किया गया, तो उसके पीछे यही भारतीय दृष्टि थी कि अधिकार और कर्तव्य परस्पर पूरक हैं। गीता में यह नैतिक आग्रह स्पष्ट दिखाई देता है कि बिना कर्तव्य-पालन के कोई व्यवस्था स्थिर नहीं रह सकती। संविधान भी यही संदेश देता है कि नागरिक के अधिकार उसकी कर्तव्य-निष्ठा से सशक्त होते हैं, कमज़ोर नहीं।

भारतीय संवैधानिक लोकतंत्र के शासन का आधार केवल अधिकारों की बहुलता नहीं है, बल्कि संतुलन की व्यवस्था है। न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका की त्रि-संरचना संतुलन और विवेक पर आधारित है। गीता में जो जीवन-दृष्टि मिलती है, वह अतिरेक व अतिवाद से बचने और मध्यमार्गीय बुद्धि को अपनाने की शिक्षा देती है। संविधान में 'युक्तियुक्त विवेक', 'नैतिकता', 'सार्वजनिक व्यवस्था', 'विवेकपूर्ण संतुलन' जैसे सिद्धांत इसी नैतिक परंपरा से प्रेरित जान पड़ते हैं। यह दृष्टि भारतीय संविधान को केवल कानूनी दस्तावेज नहीं रहने देती, बल्कि उसे मूल्य-निष्ठ शासन की आधारशिला बनाती है।

भारतीय परंपरा में समाज के कमजोर, पीड़ित, वंचित और हाशिए पर खड़े व्यक्ति की सुरक्षा का दायित्व हमेशा से शासन पर रहा है। गीता में वर्णित दृष्टि यह मानती है कि समाज का वास्तविक धर्म वही है जो दुर्बलों की रक्षा करे, न्याय को प्राथमिकता दे और जीवन में संतुलन स्थापित करे। संविधान का उद्देश्य भी यही है कि ऐसा समाज बनाया जाये जिसमें व्यक्ति की गरिमा सर्वोपरि हो और राज्य लोककल्याण को अपना कर्तव्य समझे।

संविधान न केवल नागरिकों को, बल्कि शासन-तंत्र को भी उत्तरदायित्व और पारदर्शिता का पाठ पढ़ाता है। शासन का लक्ष्य 'सेवा' है। गीता के अनुसार भी नेतृत्व वह है जो दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत करे, समाज की भलाई को प्राथमिकता दे और निर्णयों में निष्पक्षता बनाए रखे। यही नेतृत्व-दृष्टि भारतीय लोकतंत्र को स्वस्थ और जीवंत बनाती है। जब एक प्रशासक, न्यायाधीश, विधिनिर्माता या जनप्रतिनिधि इस नैतिक दृष्टि को अपनाता है, तो संविधान की आत्मा कार्यान्वित होती है और जब यह दृष्टि खो जाती है, तो संवैधानिक संस्थाएं केवल औपचारिक संरचनाएं बनकर रह जाती हैं।

अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व, स्वतंत्रता के साथ संयम और विविधता के साथ सहिष्णुता... ये सभी संविधान की उसी नैतिक परंपरा से निकले हैं, जिसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि गीता ने दी है। जब समाज इस चेतना को भूलता है, तो कानून की संख्या बढ़ती है, किंतु व्यवस्था कमजोर हो जाती है।

आज संविधान दिवस आत्ममंथन का अवसर है... क्या हम संविधान की उस नैतिक दृष्टि के अनुरूप चल रहे हैं जिसने हमें दुनिया का सबसे जीवंत लोकतंत्र बनाया? क्या हम अधिकार मांगते समय अपने कर्तव्यों को भी याद रखते हैं? क्या प्रशासन और राजनीति पारदर्शिता और सेवा की भावना पर चल रही है? क्या हम समानता, न्याय और सह-अस्तित्व को प्राथमिकता देते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर हमें बताता है कि संविधान कितनी गहराई से हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा है।

अभियान

वैकुण्ठ के द्वार पर खड़ा अनोखा भाग्य, जिसने देवत्व को दानवत्व और फिर दिव्यता में बदल दिया

वैकुण्ठ की शांत नीली उजास में समय ठहरकर सुनता है कि भगवान विष्णु के द्वार पर खड़े दो प्रहरी—जय और विजय—कैसे तीन-तीन जन्मों में दानव बनकर भी भगवान की लीला के केंद्र बन गए। यह कथा उतनी ही अद्भुत है जितना कि स्वयं ब्रह्मांड, क्योंकि इसमें प्रेम है, क्रोध है, अहंकार है, और सबसे अधिक वह दिव्य योजना है जो हर जन्म, हर मृत्यु से परे है।

वैकुण्ठ, जहाँ कमल की सुगंध भी मंत्रों की तरह तैरती है, जहाँ कभी न रुकने वाली हवाएँ भी भगवान के श्वास-ताल से चलती हैं, वहीं जय और विजय पहरेदार बनकर खड़े रहते थे। उनके चेहरे कठोर थे, पर हृदय पूरी तरह समर्पित। उनका तेज ऐसा था कि देवता भी उनके दर्शन से गर्व और सुरक्षा महसूस करते थे। पर एक दिन ऐसा आया जब भाग्य ने उनके सामने एक ऐसा द्वार खोला, जो उन्हें धरती पर उतारने वाला था।

चार कुमार—सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार—जिनके चरणों से ज्ञान की गंगा बहती है, भगवान विष्णु से मिलने पहुँचे। वे बालक जैसे थे, परन्तु ब्रह्म के स्वयं साक्षात अंश। जब वे द्वार पर पहुँचे तो जय और विजय ने अपने कर्तव्यवश उन्हें रोक दिया। यह रुकावट छोटी थी, पर उनके भीतर कौंधती क्षणिक कठोरता और कुमारों का निर्मल हृदय—दोनों मिलकर एक ब्रह्मांडीय घटना बन गए। ऋषियों ने क्रोध में कहा कि तुम दोनों तीन जन्मों तक दानव बनकर जन्मोगे और भगवान के सान्निध्य से दूर रहोगे।

उनकी आवाज शाप नहीं, वज्र की तरह गिरी।

जय और विजय व्याकुल हुए, काँप गए, क्योंकि उनके लिए भगवान से दूर रहना ही सबसे बड़ा दंड था। वे विष्णु के पास दौड़े। भगवान ने उन्हें शांत किया और कहा—"यह भी मेरी लीला का हिस्सा है। तुम दोनों मेरे भक्त हो, इसलिए तुम तीन जन्मों तक दानव बनोगे, पर हर जन्म में मैं स्वयं तुम्हारा वध करूँगा और तुम्हें वापस अपने पास ले आऊँगा। यह शाप नहीं, यह एक मार्ग है, जो तुम्हें और भी महान बनाकर मेरे पास वापस लाएगा।"

और इस प्रकार आरंभ हुआ वह अद्भुत अध्याय, जब देव दानव बने, और दानव भी भगवान की लीला के साधन बन गए।

पहला जन्म—हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु।

हिरण्याक्ष, जिसकी आँखों में दहकती अग्नि और हाथों में अपार बल था, वह समुद्र के गर्भ में घुसकर पृथ्वी को पाताल में ले गया। देवता काँप उठे। पृथ्वी कराह उठी और भगवान विष्णु ने वराह रूप धारण किया। वह दिव्य वराह—जिसके दाँतों पर पृथ्वी चमक रही थी, जिसकी गर्जना में ब्रह्मांड की ध्वनि बजती थी—हिरण्याक्ष से भिड़ा। वह युद्ध केवल दो योद्धाओं का नहीं, बल्कि असुरत्व और दिव्यता का युद्ध था। अंत में भगवान के प्रहार से हिरण्याक्ष गिर पड़ा—और जय मुक्त हुए, पर कथा यहाँ खत्म नहीं हुई।

हिरण्यकशिपु, अत्यंत बलशाली, अनन्त अहंकारी, जिसने अपने पुत्र तक को भगवान का नाम लेने से रोका। उसके सामने ब्रह्मा का वरदान था, और उसके भीतर यह वेग कि पूरा ब्रह्मांड उसके आगे झुके। पर उसके ही घर में प्रह्लाद बैठा था—जो भगवान की भक्ति में डूबा था। जब हिरण्यकशिपु ने स्तंभ पर प्रहार किया और भगवान नरसिंह रूप में प्रकट हुए—आधा सिंह, आधा मनुष्य, पर पूर्ण दिव्यता—तब विजय का दानवी जन्म भी समाप्त हुआ।

नरसिंह ने उसे अपनी जंघा पर लिटाकर, नखों से चीरकर उस अहंकार का अंत किया जिसने देवताओं की साँसें रोक रखी थीं। हिरण्यकशिपु का रक्त बहा, पर उसी क्षण विजय अपनी मूल आत्मा को पुनः प्राप्त कर रहे थे।

जय और विजय की लीला यहीं नहीं रुकती। बाद में वे रावण-कुंभकरण बने, फिर शिशुपाल-दन्तवक्र—हर बार भगवान को अवतरित होना पड़ा, हर बार यह सिद्ध हुआ कि भक्त भगवान से दूर जाए, यह ब्रह्मांड स्वीकार नहीं करता। भगवान स्वयं मार्ग बनाते हैं, भले वह युद्ध के माध्यम से ही क्यों न हो।

यह कथा दानवों की नहीं, यह प्रेम की शक्ति की कहानी है—जो भगवान को भी अवतार लेने पर मजबूर करती है।

आज भी जय और विजय वैकुण्ठ के द्वार पर खड़े हैं, उसी तेज, उसी धैर्य, और उसी गहन मुस्कान के साथ—जो किसी से कहती लगती है कि "हमने दानव बनकर भी भगवान का सबसे बड़ा स्नेह पाया है, क्योंकि अंत में वही हमें उठाकर फिर अपने चरणों में ले आए।"

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रचंड जनसैलाब के अदम्य उत्साह के बीच 'सरदार@150 : राष्ट्रीय यूनिटी मार्च' का शुभारंभ कराया

करमसद से केवडिया तक 152 किलोमीटर लंबी पदयात्रा के शुभारंभ अवसर पर त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा, केन्द्रीय राज्य मंत्रियों श्रीमती अनुप्रिया पटेल एवं श्रीमती निमुबेन बांभणिया की विशेष उपस्थिति

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- 'सरदार पटेल@150 : यूनिटी मार्च' पदयात्रा राष्ट्रभक्ति का राजमार्ग प्रशस्त करेगी
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी प्रेरित यह पदयात्रा सरदार पटेल को श्रेष्ठ श्रद्धांजलि है
- प्रधानमंत्री के नेतृत्व में राष्ट्र निर्माण का महाकार्य हो रहा है
- यह राष्ट्रीय पदयात्रा सरदार साहब के जीवन मूल्यों एवं आदर्शों को जानकर राष्ट्र निर्माण में सहभागी होने के लिए स्वर्णिम अवसर है
- देश में अनेक कल्याणकारी योजनाओं के सटीक क्रियान्वयन के कारण करोड़ों लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं

यह पदयात्रा कोई साधारण पदभ्रमण नहीं; बल्कि देश की एकता, अखडंता एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक समान लौह पुरुष सरदार पटेल को समर्पित विशेष आयोजन है : त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक

(जीएनएस)। गांधीनगर, 26 नवंबर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से सरदार साहब की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित करमसद से केवडिया तक की राष्ट्रीय पदयात्रा 'सरदार@150 : यूनिटी मार्च' को मंगलवार को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा ने फ्लैग ऑफ करके प्रस्थान कराया। आणंद जिले के करमसद में प्रचंड जनसैलाब के अदम्य उत्साह तथा 'जय सरदार' के गगनभेदी नारों की गूंज के साथ यह राष्ट्रीय पदयात्रा आगामी 6 दिसंबर को सरदार पटेल की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा यानी स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पहुँचेगी। 150 स्थायी पदयात्रियों के साथ आणंद के अलावा वडोदरा तथा नर्मदा जिलों से गुजरने वाली इस पदयात्रा का भव्य शुभारंभ कराते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 'सरदार@150 : यूनिटी मार्च' पदयात्रा राष्ट्रभक्ति का राजमार्ग प्रशस्त करेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी प्रेरित यह पदयात्रा सरदार पटेल को श्रेष्ठ श्रद्धांजलि है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने संविधान दिवस के अवसर पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर तथा संविधान सभा के सभी सदस्यों को आदरपूर्वक नमन करते हुए कहा कि विश्व नेता तथा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के प्रेरणास्रोत श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में सरदार साहब की 150वीं जयंती भव्य रूप से मनाने का आयोजन हुआ है। इसी उपक्रम में जहाँ सरदार साहब का बचपन बीता था और जहाँ उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी, उस पवित्र भूमि करमसद से एकता के प्रतीक स्टैच्यू ऑफ यूनिटी-केवडिया तक यह यूनिटी मार्च आयोजित हो रही है। मुख्यमंत्री ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के निर्माण को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लौह पुरुष सरदार पटेल को दी गई सच्ची श्रद्धांजलि बताते हुए कहा कि सरदार साहब की यह अभूतपूर्व प्रतिमा विश्वभर में भारत के सामर्थ्य एवं गौरव के इतिहास का जीवंत प्रतीक बनी है।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि सरदार साहब ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के उप प्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री के रूप में 562 देसी रजवाड़ों का विलय कर अखंड भारत का निर्माण किया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सरदार साहब के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' तथा 'आत्मनिर्भर भारत' बनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरदार साहब द्वारा दिए गए राष्ट्रीय एकता के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य के साथ यह यूनिटी मार्च आयोजित हो रही है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस पदयात्रा के दौरान आयोजित कार्यक्रमों से लोग सरदार साहब के जीवन मूल्यों को जानेंगे तथा राष्ट्रीय एकता का भाव अधिक सुदृढ़ होगा। उन्होंने सरदार साहब के मूल्यों के आधार पर नए भारत के निर्माण का महाकार्य हो रहा होने का उल्लेख करते हुए जोड़ा कि करोड़ों हिंदुओं की आस्था के प्रतीक राम मंदिर में श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से ध्वजारोहण के साथ मंदिर निर्माण कार्य संपन्न हुआ है। कुछ दिन पहले देश की श्रम शक्ति का सम्मान करने वालीं ऐतिहासिक चार श्रम संहिताएँ देश में लागू हुई हैं। सरदार साहब हमेशा श्रमिकों एवं किसानों के हित के लिए कार्यरत रहे, जिन्होंने अहमदाबाद के कामगारों के अधिकार तथा खेडा व बारडोली के किसानों को न्याय दिलाने के लिए अंग्रेजी हुकूमत को झकझोर दिया था।

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में कश्मीर से धारा 370 समाप्त हुई, जिसके परिणामस्वरूप कश्मीर से कन्याकुमार तक भारत एक एवं अखंड राष्ट्र बना है। श्री नरेन्द्र मोदी ने यह भी कहा है कि राष्ट्र तथा समाज के लिए राष्ट्रीय एकता अत्यंत ही आवश्यक है।

श्री पटेल ने कहा कि सरदार साहब का गरीबी दूर करने का सपना प्रधानमंत्री ने पूरा किया है। देश में अनेक कल्याणकारी योजनाओं के सटीक क्रियान्वयन के कारण करोड़ों लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। करोड़ों लोगों को उनके सपनों का घर मिला है तथा स्वच्छ पेयजल भी उपलब्ध हुआ है।

मुख्यमंत्री ने 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र के माध्यम से विकसित भारत बनाने के प्रधानमंत्री के सपने को साकार करने का अनुरोध करते हुए जोड़ा कि प्रधानमंत्री ने जब उनका संमग्र जीवन 'राष्ट्र प्रथम' के भाव के साथ देश को समर्पित किया है, तब हम सभी एकता के मूल मंत्र को आत्मसात कर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए आगे बढ़ेंगे। यही सरदार साहब को सच्ची श्रद्धांजलि है।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा ने कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रह कर अपने प्रेरक संबोधन में 'सरदार@150 : यूनिटी मार्च' अंतर्गत त्रिपुरा राज्य में मनाए गए उत्सव तथा आयोजन की रूपरेखा दी। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि यह पदयात्रा कोई सामान्य पदभ्रमण नहीं है; बल्कि देश की एकता, अखंडता तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक समान लौह पुरुष सरदार पटेल को समर्पित विशेष आयोजन है। उन्होंने राज्य की जनता तथा त्रिपुरा की ओर से उपस्थित सभी को अभिनंदन दिया।

श्री साहा ने इस वर्ष के राष्ट्रीय एकता दिवस उत्सव को विशेष बताया और 'सरदार@150 : यूनिटी मार्च' का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि यह राष्ट्रीय पदयात्रा स्वतंत्र भारत के एकीकरण के शिल्पकार सरदार पटेल के योगदान का स्मरण कर देश के युवाओं में देशभक्ति, एकता तथा उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ बनाएगी। इस अभियान की मूल भावना 'एक भारत, आत्मनिर्भर भारत' से जुड़ी हुई है।

उन्होंने इस अवसर पर सरदार पटेल के ऐतिहासिक योगदान का स्मरण करते हुए आगे कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 562 देसी रजवाड़ों का विलय कर अखंड भारत का निर्माण सरदार साहब की असीमित दूरदर्शिता, दृढ़ नेतृत्व एवं राष्ट्र प्रेम को व्यक्त करता है। सरदार पटेल देश की एकता एवं संगठित राष्ट्रीयता के लिए जीवनभर समर्पित रहे।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री ने वर्ष 2014 से सरदार पटेल की जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के निर्णय की सराहना की। वर्ष 2015

में सरदार पटेल की 140वीं जयंती पर प्रधानमंत्री ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' पहल की परंपरा शुरू की थी; जो देश की भाषा, संस्कृति एवं विरासत को जोड़ने का राष्ट्रीय अभियान है। उन्होंने गौरवपूर्वक कहा कि गुजरात में नर्मदा तट पर स्थापित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, जो विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है, देश की एकता तथा शक्ति की विशिष्ट प्रतीक है।

अंत में श्री साहा ने यूनिटी मार्च को देश को सुदृढ़, समृद्ध एवं एकताबद्ध बनाने का संकल्प व्यक्त करने वाली बताते हुए युवाओं से राष्ट्र के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने, एकता को सर्वोच्च मूल्य के रूप में बनाए रखने और सरदार पटेल के संकल्पित भारत के निर्माण में योगदान देने की अपील की।

आरंभ में राज्य के कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने स्वागत संबोधन में कहा कि सरदार साहब के जीवन तथा कार्यों को जानने के अलावा देश को एक करने के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयासों को जन-जन तक पहुँचाने का यह अवसर है। गुजरात के दो सपूत सरदार पटेल तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी विश्वनायक सिद्ध हुए हैं। श्री वाघाणी ने राष्ट्रीय पदयात्रा की रूपरेखा भी दी।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा ने संविधान दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए सरदार पटेल की 150वीं जयंती के उत्सव को देश के लिए गौरव का क्षण बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरदार पटेल, भगवान बिरसा मुंडा तथा वंदे मातरम् गीत के 150 वर्ष का उत्सव एक शुभ समन्वय है तथा यह देश के लिए गौरव का क्षण है।

राष्ट्रीय पदयात्रा का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने जिस प्रकार देसी रजवाड़ों को एक कर अखंड भारत के निर्माण में महायोगदान दिया है, उसे सच्चे अर्थ में भावांजलि देने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व एवं मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में 'सरदार@150 : यूनिटी मार्च' का आयोजन किया गया है।

श्री विश्वकर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सरदार पटेल की 'एक भारत' की परिकल्पना साकार करने के लिए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' तथा 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने स्वदेशी वस्तुएँ अपनाने का अनुरोध करते हुए सभी को आत्मनिर्भर भारत के लिए संकल्पबद्ध किया।

इस अवसर पर आणंद जिला कलेक्टर श्री प्रवीण चौधरी ने इस पदयात्रा को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रेषित शुभकामना संदेश का पठन किया।

महानुभावों ने कार्यक्रम से पूर्व सरदार पटेल के निवास स्थान पर जाकर वहाँ उन्हें स्मरणांजलि दी। इसके बाद शास्त्री मैदान में आयोजित कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सरदार पटेल की जीवन यात्रा को दर्शाने वाला गीत रिमोट कंट्रोल से लॉन्च किया। इस अवसर पर सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एकता पदयात्रा की 'माई भारत' द्वारा निर्मित लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर केन्द्रीय राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल, केन्द्रीय राज्य मंत्री श्रीमती निमुबेन बांभणिया, राज्य के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी, वित्त राज्य मंत्री श्री कमलेशभाई पटेल, आणंद के सांसद श्री मीतेशभाई पटेल, खेडा के सांसद श्री देवूसिंह चौहाण, भाजपा महासचिव श्री सुनील बंसल, जिला अग्रणी श्री संजयभाई पटेल, आणंद जिला पंचायत अध्यक्ष श्री हसमुखभाई पटेल, आणंद जिले के विधायक श्री योगेशभाई पटेल, श्री विपुलभाई पटेल, नडियाद के विधायक श्री पंकज देसाई, केन्द्रीय युवा एवं खेल सचिव श्री पल्लवी जैन, खेडा जिला कलेक्टर श्री अमित प्रकाश यादव, करमसद-आणंद महानगर पालिका आयुक्त श्री मिलिंद बापना, जिला विकास अधिकारी सुश्री देवहुति, जिला पुलिस अधीक्षक श्री गौरव जसाणी, गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री भाग्येश झा सहित देश एवं राज्य के अग्रणी पदाधिकारी, अधिकारी, युवा तथा विद्यार्थी भी राष्ट्रीय एकता पदयात्रा के शुभारंभ अवसर पर उपस्थित रहकर इस ऐतिहासिक घटना के साक्षी बने।

तीन ट्रेनों का विभिन्न स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए तीन ट्रेनों को अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैं:

1. 10 दिसंबर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19019 बांद्रा टर्मिनस–हरिद्वार एक्सप्रेस चांपानेर रोड और खरसालिया स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन का चांपानेर रोड स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 07:18 बजे/07:19 बजे तथा खरसालिया स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 07:48 बजे/07:49 बजे होगा। इसी तरह, 10 दिसंबर, 2025 को हरिद्वार से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19020 हरिद्वार– बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस खरसालिया और चांपानेर रोड स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन खरसालिया स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 13:01 बजे/13:02 बजे तथा खरसालिया स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 13:20 बजे/13:21 बजे होगा।

2. 01 दिसंबर, 2025 को अहमदाबाद से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस बाजवा स्टेशन पर रुकेगी। यह ट्रेन 02:27 बजे बाजवा स्टेशन पहुंचेगी और 02:29 बजे प्रस्थान करेगी।

ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भावनगर मंडल पर मंडल रेल प्रबंधक ने "संविधान दिवस" के अवसर पर राष्ट्रीय अखंडता की शपथ दिलाई

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल पर, 26 नवंबर, 2025 (बुधवार) को मंडल कार्यालय में पूरे उत्साह के साथ "संविधान दिवस"(Constitution Day) मनाया गया। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने संविधान दिवस के उपलक्ष्य में भावनगर मंडल के अधिकारियों और कर्मचारियों को भारत के संविधान की उद्देशिका का पठन करवाया व संविधान के लिए संकल्पबद्ध और समर्पित रहने एवं राष्ट्रीय अखंडता की शपथ दिलवायी।

राष्ट्र में साम्प्रदायिक सदभाव बना रहे इसके लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर सेवारत रहने की शपथ दिलवायी। संविधान दिवस के सन्दर्भ में मंडल रेल प्रबंधक ने भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने और नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता की प्राप्ति के लिए, इन सभी के साथ व्यक्ति की गरिमा, राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करती भाईचारे की भावना की अभिवृद्धि के लिए संकल्पबद्ध होने की शपथ दिलवायी।

भावनगर मंडल के सभी स्टेशनों, डिपो, ऑफिस एवं वर्कशॉप पर सभी अधिकारियों, पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा संविधान की उद्देशिका का पठन करके, पूरे उत्साह के साथ "संविधान दिवस" मनाया गया।

संविधान दिवस: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का भावपूर्ण स्मरण

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को संविधान दिवस के अवसर पर भारत के संविधान निर्माता डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री ने गांधीनगर के सेंट्रल विस्टा गार्डन में स्थित बाबासाहेब आंबेडकर की प्रतिमा को भावांजलि देकर बाबासाहेब आंबेडकर की भाव-वंदना की।

इस अवसर पर गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री आशिष दवे, गांधीनगर महानगरपालिका तथा जिला प्रशासन के अधिकारी और नगरजन उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से

2015 से हर वर्ष 26 नवंबर को देशभर में संविधान दिवस के रूप में मनाने की परंपरा शुरू हुई है। इस दिन संविधान की प्रस्तावना का पठन भी किया जाता है।

राष्ट्रीय एकता के संदेश को जन-जन के हृदय में पुनर्स्थापित करने के लिए सरदार@150 : यूनिटी मार्च देशवासियों में अनूठा प्राण फूँकेगी

विश्व की सबसे ऊँची सरदार साहब की प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के प्रोजेक्ट की मुलाकात से सरदार वल्लभभाई पटेल के पौत्र श्री गौतमभाई पटेल प्रभावित

(जीएनएस)। गांधीनग : भारत के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्रीय एकता, समरसता, सहयोग, स्वाभिमान एवं देशप्रेम की भावना अधिक प्रज्ज्वलित हो; इसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अखंड भारत के शिल्पकार तथा लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती समग्र देश में भव्यातिभव्य रूप से मनाने की प्रेरणा दी है। "हम सभी भारतीय हैं और भारत हमारा है। हम एक होकर रहेंगे, तो ही प्रगति कर सकेंगे।" सरदार साहब के राष्ट्रीय एकता के इस संदेश को जन-जन के हृदय में पुनर्स्थापित करने के लिए समग्र देश में 'सरदार@150 : यूनिटी मार्च' का आयोजन किया गया है, जिसके अंतर्गत गुजरात में करमसद से केवडिया तक आयोजित होने वाली इस पदयात्रा का शुभारंभ मंगलवार को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने करमसद से कराया है।

प्रधानमंत्री द्वारा सरदार साहब की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का केवडिया में निर्माण कर वहाँ विभिन्न प्रोजेक्ट के जरिये केवडिया-एकता नगर को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिसकी सरदार वल्लभभाई पटेल के पौत्र श्री गौतमभाई पटेल ने मुलाकात ली और वे बहुत ही प्रभावित हुए हैं। इस प्रोजेक्ट के बारे में श्री गौतमभाई पटेल ने प्रधानमंत्री के दिशादर्शन में हुए कामकाज की प्रशंसा करते हुए कहा कि नर्मदा जिले के दुर्गम आदिवासी क्षेत्र में चल रहे महत्वाकांक्षी विकास प्रोजेक्ट की उनकी मुलाकात के दौरान स्थानीय नागरिकों ने प्रोजेक्ट को लेकर खुशी और संतोष व्यक्त किया है। इस प्रोजेक्ट द्वारा गाँवों में नर्मदा नदी का शुद्ध पानी घर-घर पहुँचाया जा रहा है। साथ ही बिजली की सुविधा भी प्रदान की जा रही है। इसका सीधा प्रभाव स्थानीय लोगों के जीवन पर देखने को मिल रहा है। घर में टीवी, पंखे तथा अन्य विद्युत उपकरण चल रहे हैं, बच्चे स्कूल में नियमित रूप से जा रहे हैं और गाँव में ही गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्थानीय महिला गाइड ने बहुत ही बढ़िया ढंग से पूरे प्रोजेक्ट का विवरण समझाया। इस प्रोजेक्ट का सबसे बड़ा लाभ यह है कि गाँव के युवाओं को अब शिक्षा तथा रोजगार के लिए गाँव छोड़कर शहरों में भटकना नहीं पड़ेगा। इस क्षेत्र में यूनिवर्सिटी स्तर का शैक्षणिक संस्थान भी शुरू होने वाला है, जिससे स्थानीय छात्रों को गाँव में रहकर ही उच्च शिक्षा एवं रोजगार के अवसर मिलेंगे।

उन्होंने जोड़ा, "इतने बड़े पैमाने पर ऐसा विकास प्रोजेक्ट स्थापित करना और उसमें भी इतने सारे लोगों को जोड़ना वास्तव में प्रशंसनीय कार्य है। गाँव के लोगों के चेहरों पर खुशी देखने को मिलना सबसे बड़ी बात है। विशेषकर युवाओं को गाँव में ही शिक्षा तथा रोजगार मिलने की बात मुझे बहुत अच्छी लगी।"

उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रोजेक्ट से आदिवासी बहुल क्षेत्र के लोगों का जीवन धीरे-धीरे बदल रहा है और आने वाले समय में यह क्षेत्र का विकास का मॉडल बनेगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और त्रिपुरा के मुख्यमंत्री डॉ. मानिक साहा ने करमसद स्थित सरदार पटेल के निवास स्थान पर सरदार साहब की प्रतिमा पर सूत की माला पहनाकर श्रद्धांजलि अर्पित की

(जीएनएस)। गांधीनगर : सरदार पटेल की 150वीं जयंती के उत्सव के अंतर्गत बुधवार को करमसद से स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक एकता और अखंडता के मजबूत संदेश के साथ आयोजित हो रही राष्ट्रीय पदयात्रा के शुभारंभ अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने करमसद स्थित सरदार पटेल के निवास स्थान जाकर सरदार साहब की प्रतिमा पर सूत की माला पहनाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और त्रिपुरा के मुख्यमंत्री डॉ. मानिक साहा सहित उपस्थित महानुभावों ने सरदार पटेल और विट्ठलभाई पटेल की प्रतिमाओं पर सूत की माला अर्पित की।

इस अवसर पर त्रिपुरा के मुख्यमंत्री डॉ. मानिक साहा की विशेष उपस्थिति में मुख्यमंत्री ने सरदार साहब की नई प्रतिमा का अनावरण किया। मुख्यमंत्री सरदार पटेल के पैतृक निवास में सरदार साहेब

की वंशावली (फैमिली ट्री) से भी अवगत हुए।

इस अवसर पर गुजरात के कृषि मंत्री श्री जीतू वाघाणी, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी, वित्त, पुलिस और हाउसिंग राज्य मंत्री श्री कमलेशभाई पटेल, आणंद के सांसद श्री मितेश पटेल, खेड़ा के सांसद श्री देवूसिंह चौहान, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल, खंभात के विधायक श्री चिराग पटेल, अग्रणी श्री जगदीश पंचाल, आणंद कलेक्टर श्री प्रवीण चौधरी, खेड़ा कलेक्टर श्री अमित प्रकाश यादव, मनपा आयुक्त श्री मिलिंद बापना, रेंज आईजी सुश्री विधि चौधरी, जिला विकास अधिकारी सुश्री देवाहुति, पुलिस अधीक्षक श्री जी.जी. जसाणी, अग्रणी श्री संजय पटेल सहित कई गणमान्य व्यक्ति और अधिकारी मौजूद रहे।

स्वदेशी से स्वाभिमान तक : गरवी गुर्जरी के माध्यम से गुजरात के हस्त कलाकार 'हर घर स्वदेशी' अभियान को दे रहे हैं वेग

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'हर घर स्वदेशी' अभियान को वेग देने में गुजरात सरकार की गरवी गुर्जरी का महत्वपूर्ण योगदान

'गरवी गुर्जरी' के सहयोग से गांधीनगर की रिद्धिबेन चावडा ने कलमकारी को आधुनिक जीवनशैली के साथ जोड़कर स्वदेशी वस्तुओं को दिया प्रोत्साहन, कपड़ों के अलावा होम डेकोर तथा लाइफस्टाइल प्रोडक्ट्स पर भी रंग उतारे

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'हर घर स्वदेशी' तथा 'वोकल फॉर लोकल' के आह्वान को गुजरात राज्य सुदृढ़ समर्थन प्रदान कर रहा है। विशेषकर हस्तकला क्षेत्र में कारीगरों को प्रोत्साहन देकर राज्य ने स्वदेशी अभियान को नई दिशा दी है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार 'आत्मनिर्भर गुजरात से आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण के साथ स्वदेशी कारीगरी तथा परंपरागत हस्तकला को आधुनिक बाजार में नई पहचान दे रही है। इस प्रयास में गुजरात सरकार की संस्था 'गरवी गुर्जरी' महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। गरवी गुर्जरी के मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन से गुजरात के कारीगरों के लिए नए आयाम खुले हैं, जिसमें गांधीनगर की कलमकारी कलाकार रिद्धिबेन चावडा की यात्रा उल्लेखनीय है।

कलमकारी को नई पहचान दिलाने के रिद्धि चावडा के प्रयास में गरवी गुर्जरी का साथ

वर्ष 2019 में जब रिद्धिबेन ने पहली बार हाथ में पेंटिंग ब्रश उठाया, तब उन्होंने ऐसा सोचा भी नहीं होगा कि उनकी परंपरागत कला को नई पहचान मिलेगी और वह कला अन्य लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी लेकर आएगी। रिद्धिबेन सुंदर कलमकारी (कपड़ों पर विभिन्न चित्रकारी करने की कला) करके भारतीय लोक परंपरा से प्रेरित सुंदर चित्र बनाती हैं। शुरुआती वर्षों में उन्होंने उत्कृष्ट कारीगरी कर हैंड-पेंटेड कलमकारी साड़ी, दुपट्टे तथा कुशन बनाए थे, जो पौराणिक कथाओं, प्रकृति एवं विभिन्न भावों को प्रतिबिंबित करते थे। रिद्धिबेन ने कहा, "कलमकारी सुंदर कार्य है, परंतु यह समय लेने वाली कला है और खर्चीली भी है। मैं कलमकारी को लोगों के लिए सुलभ बनाना चाहती थी और इस दौरान मेरा परिचय गरवी गुर्जरी से हुआ तथा वहाँ से मेरी कला की यात्रा प्रारंभ हुई।"

गरवी गुर्जरी ने मेरी कलमकारी को नई दिशा दी : रिद्धि चावडा

रिद्धिबेन ने जब कस्टमाइज्ड ऑर्डर लेने शुरू किए, उस दौरान उनका परिचय गरवी गुर्जरी से हुआ, जो परंपरागत कारीगरों को प्रोत्साहन देने वाला प्रसिद्ध मंच है। रिद्धिबेन ने गरवी गुर्जरी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के माध्यम से परंपरागत कलमकारी कला को रोजमर्रा के उपयोगी उत्पादों में रूपांतरित कर स्वदेशी कला को घर-घर पहुँचाने का प्रयास किया। उन्होंने परंपरागत कपड़ों तक सीमित न रहते हुए आधुनिक होम डेकोर तथा लाइफस्टाइल प्रोडक्ट्स पर भी रंग उतारे। उनके द्वारा गरवी गुर्जरी के सहयोग से तैयार की गई कैंडल, ट्रे, कोस्टर जैसी होम एक्सेसरीज व अन्य सुशोभन की वस्तुएँ लोकप्रिय बनी हैं। रिद्धिबेन का यह प्रयास प्रधानमंत्री के 'हर घर स्वदेशी' अभियान के उद्देश्य से सुसंगत है, जो घर-घर स्वदेशी उत्पादों के उपयोग पर बल देता है।

20 से अधिक महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान कर महिला सशक्तिकरण का उदारण प्रस्तुत किया

गरवी गुर्जरी के माध्यम से मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) के लिए दिवाली गिफ्ट ऑर्डर मिलने के बाद रिद्धि चावडा ने अपने वर्कशॉप में 20 से अधिक महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान कर महिला सशक्तिकरण का उत्तर उदाहरण प्रस्तुत किया है। रिद्धिबेन ने कहा, "गुजरात सरकार की गरवी गुर्जरी संस्था के सहयोग से हमें अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर मिला है। हमारा ध्येय इस हस्तकला के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना तथा सृजनात्मकता को विस्तृत करना है।"

स्वदेशी अभियान से आत्मनिर्भरता की ओर दृढ़ता से आगे बढ़ता गुजरात

राज्य के हस्तकला एवं हथकरघा कारीगरी की समग्र देश व विश्व में विशिष्ट पहचान स्थापित करने, उसे बनाए रखने तथा उसके विकास के मुख्य उद्देश्य के साथ कार्यरत गुजरात राज्य हथकरघा एवं हस्तकला विकास निगम (जीएसएचएचडीसी) गुजरात की इस परंपरागत वेल को निरंतर सींच रहा है। जीएसएचएचडीसी के गरवी-गुर्जरी एम्पोरियम के माध्यम से राज्य में ग्रामीण स्तरीय परंपरागत कला-कारीगरी के व्यवसाय से तेजी से प्रगति कर रहे हैं। गरवी-गुर्जरी हथकरघा-हस्तकला की श्रेष्ठ कृतियों का सृजन करने वाले सुदूरवर्ती-दूरदराजी गाँवों के हजारों कारीगरों के कला-कौशल तथा परिश्रम को लोगों तक पहुँचाता है और उनके उत्पादों के विक्रय में वृद्धि करने के निरंतर प्रयास करता है। गरवी गुर्जरी वह मंच है, जो कारीगरों को वित्तीय सहायता, डिजाइन मार्गदर्शन तथा मार्केट लिंकेज प्रदान करके 'स्वदेशी से स्वाभिमान' तक की यात्रा सुनिश्चित करता है।

76वें संविधान दिवस पर वडोदरा मंडल में उद्देशिका का सामूहिक पठन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल में संविधान दिवस की 76वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वडोदरा मंडल के डीआरएम कार्यालय परिसर में बड़ी संख्या में मौजूद अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संविधान की उद्देशिका (Preamble) का सामूहिक पठन कराया गया। इस अवसर पर सभी रेल कर्मचारियों को राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं समृद्धि को सुदृढ़ करने का संकल्प दिलाया गया।

उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिज्ञा ली कि वे भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के प्रति समर्पित रहेंगे तथा संविधान द्वारा प्रदत्त मूल्यों के पालन के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे।

इस वर्ष संविधान दिवस की थीम "हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान" रखी गई है। संविधान दिवस के अवसर पर ऐसे कार्यक्रम न केवल डीआरएम कार्यालय के सभी विभागों में आयोजित किए गए, बल्कि वडोदरा, भरूच,अंकलेश्वर ,आनंद ,नडियाद ,गोधरा एवं एकतानगर सहित मंडल के सभी प्रमुख स्टेशनों पर भी प्रभावी रूप से संपन्न हुए।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों के 4 जिलों को कवर करने वाली दो मल्टी-ट्रैकिंग परियोजनाओं को मंजूरी दी, जिससे भारतीय रेलवे का मौजूदा नेटवर्क लगभग 224 किलोमीटर बढ़ जाएगा

परियोजना की कुल अनुमानित लागत 2,781 करोड़ रुपये है

(जीएनएस)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने आज रेल मंत्रालय की दो परियोजनाओं को मंजूरी दे दी है, जिनकी कुल अनुमानित लागत लगभग 2,781 करोड़ है। ये परियोजनाएं भारतीय रेलवे के नेटवर्क का विस्तार करने और क्षमता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन परियोजनाओं में शामिल हैं:

देवभूमि द्वारका (ओखा) – कानालूस दोहरीकरण – 141 किलोमीटर

बदलापुर – कर्जत तीसरी और चौथी लाइन – 32 किलोमीटर

बढ़ी हुई लाइन क्षमता भारतीय रेलवे के लिए मोबिलिटी को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगी, जिसके परिणामस्वरूप परिचालन दक्षता और सेवा विश्वसनीयता में सुधार होगा। ये मल्टी-ट्रैकिंग प्रस्ताव रेल संचालन को सुव्यवस्थित करने और भीड़भाड़ को कम करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। ये परियोजनाएं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'नए भारत' के दृष्टिकोण के अनुरूप हैं, जिसका उद्देश्य क्षेत्र में व्यापक विकास करना है। इस विकास के माध्यम से, ये परियोजनाएं स्थानीय लोगों को "आत्मनिर्भर" बनाएंगी, जिससे उनके लिए रोजगार/स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

ये परियोजनाएं पीएम-गति शक्ति नेशनल मास्टर प्लान के तहत नियोजित की गई हैं, जिसका मुख्य ध्यान इंटीग्रेटेड प्लानिंग और हितधारक परामर्श के माध्यम से मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक दक्षता को बढ़ाना है। ये परियोजनाएं लोगों, वस्तुओं और सेवाओं की आवाजाही के लिए निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करेंगी। महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों के 4 जिलों को कवर करने वाली ये दो परियोजनाएं भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 224 किलोमीटर का विस्तार करेंगी।

अनुमोदित मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना से लगभग 585 गाँवों तक कनेक्टिविटी बेहतर होगी, जिनकी आबादी लगभग 32 लाख है।

कानालूस से ओखा (देवभूमि द्वारका) तक अनुमोदित दोहरीकरण परियोजना, प्रमुख तीर्थ स्थल द्वारकाधीश मंदिर तक बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगी और इससे पूरे सौराष्ट्र क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में मदद मिलेगी।

बदलापुर – कर्जत खंड मुंबई उपनगरीय गलियारे का एक अभिन्न अंग है। तीसरी और चौथी लाइन की यह परियोजना मुंबई उपनगरीय क्षेत्र में कनेक्टिविटी को बेहतर बनाएगी और यात्रियों की भविष्य की माँगों को पूरा करेगी, साथ ही दक्षिण भारत के लिए भी संपर्क सुविधा प्रदान करेगी।

यह मार्ग कोयला, नमक, कंटेनर, सीमेंट, पीओएल जैसी आवश्यक वस्तुओं के परिवहन के लिए एक महत्वपूर्ण रूट है। क्षमता बढ़ाने के इन कार्यों से रेलवे पर अतिरिक्त 18 एमटीपीए (मिलियन टन प्रति वर्ष) की माल ढुलाई होगी। रेलवे परिवहन का एक पर्यावरण-अनुकूल और ऊर्जा-कुशल साधन होने के कारण, देश के जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने और लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने, दोनों में मदद करेगा। इन परियोजनाओं से प्रति वर्ष तेल आयात (3 करोड़ लीटर) में कमी आएगी, कार्बन डाइऑक्साइड (16 करोड़ किलोग्राम) उत्सर्जन कम होगा। उत्सर्जन में यह कमी 64 लाख (चौसठ लाख) पेड़ों के रोपण के बराबर है।

पंचमहल सांसद श्री जादव ने किया गोधरा स्टेशन में अमृत भारत स्टेशन विकास कार्यों का अवलोकन

(जीएनएस)। वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने आज गोधरा स्टेशन पधारे माननीय सांसद श्री राजपालसिंह जादव के साथ गोधरा स्टेशन का निरीक्षण किया और उन्हें अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकसित करने के लिए स्टेशन पर चल रहे कार्यों की जानकारी दी। माननीय सांसद श्री जादव ने मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके एवं वरिष्ठ अधिकारियों को यह कार्य गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए पूरा करने के निर्देश दिये। श्री भडके ने माननीय सांसद को अवगत कराया कि अमृत भारत स्टेशन के तहत विकास का यह कार्य प्रगति पर है,संतोषजनक है और दिसंबर तक इसे पूरे करने का प्रयास है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने वडोदरा मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों सहित गोधरा के जनप्रतिनिधियों के साथ एक बैठक भी की। बैठक में माननीय सांसद श्री राजपालसिंह जादव, मोरवा हडफ़ से माननीया विधायक श्रीमती निमिषाबेन सुथार, गोधरा एपीएमसी निदेशक श्री मालवदीप सिंह राउलजी ने रेल संबंधी सुझावों को मंडल रेल प्रबंधक एवं मंडल के वरिष्ठ रेल अधिकारियों से साझा किया।

माननीय सांसद श्री राजपालसिंह जादव ने गोधरा के पास रेल समपार फाटकों पर रोड ओवर ब्रिज/रोड अंडर ब्रिज के निर्माण में राज्य सरकार के विभागों के साथ समन्वय से काम में तेजी लाने, गोधरा एवं डेरोल स्टेशन पर कोरोना काल से बंद स्टापेज़ को दुबारा शुरु करने, दिल्ली जाने के लिए गोधरा पर ट्रेन का स्टापेज़ देने तथा आनंद - गोधरा खंड का उपयोग करते हुए अहमदाबाद के लिए एक नई रेल सेवा शुरू करने का सुझाव दिया। माननीया विधायक श्रीमती निमिषाबेन ने रतलाम मंडल के संत रोड स्टेशन पर वलसाड इंटरसिटी के स्टापेज़ की मांग की।

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने माननीय सांसद के निर्देशन के अनुसार गोधरा स्टेशन पर अमृत भारत स्टेशन के कार्य गुणवत्ता को ध्यान में रख जल्द पूरा करने की बात कही।

श्री भडके ने कहा गोधरा के आसपास प्रलंबित रोड ओबर ब्रिज/रोड अंडर ब्रिज को राज्य सरकार के आर एंड बी विभाग तथा इरकॉन से बात कर इसे गति दी जायेगी। कोरोना काल से गोधरा एवं डेरोल पर निलंबित ट्रेन स्टापेज़ को फिर से शुरू करने के लिए प्रयत्न किया जायेगा।

वडोदरा मंडल जनप्रतिनिधियों के सुझावों को अमल कर यात्री सेवा को बेहतर बनाने के लिए हमेशा प्रयासरत है।

पूरे देश और गुजरात के लिए गौरव का क्षण

अहमदाबाद करेगा कॉमनवेल्थ गेम्स-2030 की मेजबानी!

अहमदाबाद में शताब्दी कॉमनवेल्थ गेम्स का आयोजन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत@2047' के संकल्प और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के अथक प्रयासों को और मजबूती देगा

▸▸ गुजरात बनेगा देश की खेल राजधानी : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ हम दुनिया का स्वागत करने को तैयार हैं : श्री हर्ष संघवी, उप मुख्यमंत्री

(जीएनएस)। गांधीनगर, 26 नवंबर : अंततः जिस क्षण का लोग आतुरतापूर्वक इंतजार कर रहे थे, उस घड़ी पर आधिकारिक मुहर लग गई है। जी हां, अहमदाबाद अब वर्ष 2030 में आयोजित होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी करेगा। स्कॉटलैंड के ग्लासगो में आयोजित 'कॉमनवेल्थ स्पोर्ट्स जनरल असेंबली' की आज यानी बुधवार को हुई बैठक के अंत में इसकी घोषणा की गई। यह क्षण पूरे देश और गुजरात के लिए गौरव का क्षण है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के खेल की संस्कृति को निरंतर प्रोत्साहन देने और उनकी दूरदर्शिता, माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के अथक प्रयासों के चलते भारत खेलकूद के क्षेत्र में लगातार कदम बढ़ा रहा है। नतीजतन, आज कॉमनवेल्थ खेलों के शताब्दी संस्करण के अंतर्गत अहमदाबाद को 24वें कॉमनवेल्थ खेलों की मेजबानी का गौरव प्राप्त हुआ है। इस समय जब 2030 में कॉमनवेल्थ गेम्स का शताब्दी समारोह मनाने की तैयारी चल रही है, यह निर्णय भारत और कॉमनवेल्थ स्पोर्ट्स मूवमेंट के लिए एक ऐतिहासिक क्षण साबित होगा। यह निर्णय कॉमनवेल्थ राष्ट्रों की खेल के प्रति श्रेष्ठता, एकता और संयुक्त प्रगति के 100 वर्षों के जश्न का एक शानदार प्रतीक बनेगा।

उल्लेखनीय है कि भारत में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 'खेलो इंडिया' जैसे कार्यक्रम के जरिए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज करने और उन प्रतिभाओं को निखारने में जुटे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के निरंतर मार्गदर्शन के कारण देश को कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी का गौरव प्राप्त हुआ है। इस क्षण का स्वागत करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने देश के सभी नागरिकों को बधाई देते हुए कहा कि इसका श्रेय मोदी जी के सतत प्रयासों को जाता है। खेलों से जुड़ी मजबूत बुनियादी सुविधाओं और खिलाड़ियों को तैयार कर उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर के समकक्ष खड़ा करने के कारण ही भारत और विशेषकर अहमदाबाद को यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा "अहमदाबाद, गुजरात और भारत के लिए यह अप्रतिम गौरव का क्षण है।" उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के निरंतर प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि गुजरात अब देश देश की खेल राजधानी के रूप में उभरेगा। इतना ही नहीं, विकसित गुजरात से विकसित भारत की संकल्पना को और भी मजबूत करेगा।

इस अवसर पर केंद्रीय खेल एवं युवा मामले मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने कहा "अहमदाबाद में आयोजित होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स-2030 भारत की विकास यात्रा तथा खेल को राष्ट्रीय विकास के एक उपकरण के रूप में अपनाने की प्रतिबद्धता का उत्सव बनेगा।" यह मील का पत्थर 'विकसित भारत@2047' के हमारे विजन को मजबूती देगा, साथ ही यह प्रभावशाली, समावेशी और टिकाऊ खेल कार्यक्रमों का आयोजन करने में भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

गुजरात के उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने उत्साहपूर्वक कहा "यह पल गुजरात और भारत के लिए अत्यंत गौरवशाली पल है। कॉमनवेल्थ गेम्स के शताब्दी संस्करण का आयोजन करना हमारे लिए सम्मान और जिम्मेदारी दोनों है। हम अहमदाबाद और भारत की प्रगति, समावेशी विचारधारा और आतिथ्य की झलक दर्शाने वाले इस जश्न के साथ दुनिया का स्वागत करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। ये खेल हमारी ढांचागत सुविधाओं और प्रतिभाओं को ही प्रदर्शित नहीं करेंगे, बल्कि एकता, टिकाऊ विकास और श्रेष्ठता जैसे हमारे मूल्यों का भी प्रतिबिंब होंगे।"

इस अवसर पर कॉमनवेल्थ गेम्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया की अध्यक्ष डॉ. पी.टी. उषा ने कहा "कॉमनवेल्थ स्पोर्ट ने हम पर जो विश्वासा दिखाया है, उससे हम काफी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। वर्ष-2030 के खेल केवल कॉमनवेल्थ आंदोलन के सौ वर्षों का जश्न ही नहीं, बल्कि आने वाली शताब्दी की नींव भी रखेंगे। ये खेल कॉमनवेल्थ देशों के सभी खिलाड़ियों, समुदायों और संस्कृतियों को मित्रता और प्रगति की भावना के साथ एकसूत्र में बांधेंगे।"

कॉमनवेल्थ स्पोर्ट के अंतरिम अध्यक्ष डॉ. डोनाल्ड रुकारे ने कहा "वर्ष-2030 के कॉमनवेल्थ गेम्स के मेजबान के रूप में अहमदाबाद शहर का आधिकारिक रूप से चयन भारत के कॉमनवेल्थ आंदोलन के लिए एक निर्णायक क्षण है। दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाले देश के रूप में भारत इस सौ वर्ष पुराने खेल आयोजन में विशालता-भव्यता, युवापन, महत्वाकांक्षा, समृद्ध संस्कृति और अच्छी खेल भावना एवं खेल प्रेम लेकर आएगा। इस खेल आयोजन के लिए भारत का प्रस्ताव समावेशी और भविष्योन्मुखी कॉमनवेल्थ स्पोर्ट के हमारे विजन के साथ पूरी तरह से मेल खाता है।"

आज की यह घोषणा पूरे भारत के लिए अत्यंत गौरव का क्षण है, जो देश में बढ़ते विश्व स्तरीय खेल ढांचे और इस प्रकार के स्पोर्ट्स इवेंट का आयोजन करने की राष्ट्र की क्षमता को दिखाती है। 'न्यू एज गेम्स फॉर ए न्यू सेंचुरी' की थीम पर आधारित भारत की बोली (बीड) में सर्वसमावेशिता और मजबूती की अवधारणा निहित थी, जिसने कॉमनवेल्थ जनरल असेंबली को प्रभावित किया। यह थीम कॉमनवेल्थ स्पोर्ट गेम्स के निर्धारित सिद्धांतों-किफायती, सुगम, सर्वसमावेशिता और दीर्घकालीन विरासत के बिल्कुल अनुरूप थी। अहमदाबाद का गेम्स प्लान संक्षिप्त, आधुनिक और खिलाड़ी-केंद्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। एशिया के सबसे बड़े मल्टी-स्पोर्ट विकास परियोजनाओं में से एक – सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव – गेम्स के मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करेगा। कराई स्थित गुजरात पुलिस एकेडमी और नारणपुरा स्थित वीर सावरकर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स जैसे अत्याधुनिक स्पोर्ट्स परिसर इस व्यवस्था में सहायक की भूमिका निभाकर आयोजन को मजबूती प्रदान करेंगे। इन स्पोर्ट्स परिसरों के आसपास एकीकृत परिवहन नेटवर्क, आवास की अत्याधुनिक सुविधाएं और डिजिटल बुनियादी ढांचा वर्ष 2023 से पहले अहमदाबाद की तैयारियों को सिद्ध करते हैं। इस खेल आयोजन के साथ पैरा-स्पोर्ट्स को भी शामिल किया जाएगा और सभी के लिए पहुंच सुनिश्चित करने के साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा-आधारित स्थानों, कम उत्सर्जन वाले परिवहन संसाधनों और जीरो वेस्ट मैनेजमेंट के जरिए स्थिरता यानी सस्टेनेबिलिटी में नए मानक स्थापित किए जाएंगे।

वर्ष-2030 के कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी 'विकसित भारत-2047' और 'विकसित गुजरात' की संकल्पनाओं को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर होगा। इस गेम्स के आयोजन से गुजरात तेजी से देश की 'खेल राजधानी' के रूप में रूपांतरित होगा, इससे शहरी विकास और नवाचार को बढ़ावा मिलने के साथ ही राज्य में रोजगार सृजन भी होगा और पर्यटन में उल्लेखनीय वृद्धि होने से नागरिकों की जीवन शैली में भी आमूल बदलाव आएगा।

इस विजन को मुख्य राष्ट्रीय सुधारों – राष्ट्रीय खेल नीति 2025, राष्ट्रीय खेल शासन अधिनियम 2025 और राष्ट्रीय डोपिंग विरोधी (संशोधन) बिल 2025 – से मजबूत आधार मिलता है, जो भारतीय खेल इकोसिस्टम में पारदर्शिता, शासन और खिलाड़ी कल्याण को सामूहिक रूप से मजबूत बनाता है। राष्ट्रीय खेल नीति-2025 तथा राष्ट्रीय डोपिंग विरोधी (संशोधन) बिल-2025 के अंतर्गत हुए बदलावों ने सामूहिक रूप से इस बोली को मजबूत सहयोग दिया। इस वजह से भारतीय स्पोर्ट्स इकोसिस्टम में पारदर्शिता, प्रशासन और खिलाड़ियों के कल्याण को मजबूती मिली है। ये कॉमनवेल्थ गेम्स भारत सरकार, गुजरात सरकार और कॉमनवेल्थ गेम्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीजीए इंडिया) की ओर से पारस्परिक सहयोग से आयोजित किए जाएंगे। कॉमनवेल्थ गेम्स फेडरेशन की जनरल असेंबली के समक्ष इस प्रस्ताव को श्री अश्विनी कुमार, प्रधान सचिव, खेल, युवा और सांस्कृतिक गतिविधियां विभाग, गुजरात सरकार, श्री कुणाल खरेचा, संयुक्त सचिव (खेल), भारत सरकार, श्री बंछानिधि पाणि, मनपा आयुक्त, अहमदाबाद महानगर पालिका, श्री रघु अय्यर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, कॉमनवेल्थ गेम्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने प्रस्तुत किया था। इन अधिकारियों के समन्वित प्रयासों एवं सभी हितधारकों के साथ मिलकर जनरल असेंबली के समक्ष दी गई आकर्षक प्रस्तुति ने अहमदाबाद को इन खेलों की मेजबानी दिलाने में अहम भूमिका निभाई। पारंपरिक विरासत, समावेशिता की भावना और पारस्परिक सहयोग को केंद्र में रखकर अहमदाबाद में आयोजित होने वाले कॉमनवेल्थ गेम्स का शताब्दी संस्करण अतीत का सम्मान करेगा, वर्तमान का जश्न मनाएगा और कॉमनवेल्थ स्पोर्ट आंदोलन के भविष्य को एक नया आकार देगा।

ऐसे मिली अहमदाबाद को कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी :

कॉमनवेल्थ गेम्स-2030 की मेजबानी का अधिकार हासिल करने की भारत की यात्रा कॉमनवेल्थ स्पोर्ट (सीएस) के साथ सुव्यवस्थित और सहयोगी प्रक्रिया के जरिए पूरी हुई है। इस प्रक्रिया की औपचारिक शुरुआत 9 जनवरी, 2025 को हुई थी, जब भारत को सीएस की ओर से 'लेटर ऑफ इन्टेंट' (एलओएल) का आमंत्रण मिला। इसके बाद, 29 जनवरी, 2025 को कॉमनवेल्थ स्पोर्ट के प्रमुख और सीईओ ने गुजरात का दौरा किया और राज्य के नेतृत्व के साथ बातचीत की और खेलों के लिए प्राथमिक विजन और तैयारियों का अवलोकन किया। इसके बाद 13 मार्च, 2025 को भारत ने 'लेटर ऑफ इन्टेंट' सौंपकर खेलों का आयोजन करने की औपचारिक प्रतिबद्धता दिखाई। इस दिशा में तैयारियां तेज होने पर, 29 अप्रैल, 2025 को भारत और कॉमनवेल्थ स्पोर्ट के बीच पहली बार वर्चुअल किक-ऑफ मीटिंग हुई, जिसमें वर्कस्ट्रीम, दस्तावेजों की आवश्यकता और समयसीमा निर्धारित की गई। मई, 2025 को बोली के टेक्निकल विकास के लिए एक विशेषज्ञ कंसल्टेंसी एजेंसी नियुक्त की गई। जून, 2025 में भारत का उच्च स्तरीय प्रतिनिदिमंडल लंदन गया और कॉमनवेल्थ स्पोर्ट के अधिकारियों से मिलकर प्रस्ताव के टेक्निकल और संचालनात्मक आधार को और मजबूत बनाया। इसके बाद, 3 अगस्त, 2025 को कॉमनवेल्थ स्पोर्ट की टीम ने अहमदाबाद का दौरा किया और स्थानों, बुनियादी सुविधाओं, शासन व्यवस्था और खेलों की तैयारी का मूल्यांकन किया। 23 सितंबर, 2025 को भारत ने अपनी औपचारिक बीड प्रेजेंटेशन दी, जिसमें शताब्दी कॉमनवेल्थ गेम्स के आयोजन के विजन, क्षमता और तैयारियों को दर्शाया गया । विस्तृत मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद 14 अक्टूबर, 2025 को कॉमनवेल्थ स्पोर्ट एग्जीक्यूटिव बोर्ड ने भारत की बीड को मजबूती, स्पष्टता और पेशेवर बताते हुए अहमदाबाद की मेजबान शहर के रूप में सिफारिश की। 26 नवंबर, 2025 को इस प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया गया और कॉमनवेल्थ स्पोर्ट जनरल असेंबली ने वर्ष 2030 में शताब्दी कॉमनवेल्थ गेम्स के मेजबान शहर के रूप में अहमदाबाद शहर की पुष्टि की। यह क्षण भारत, गुजरात और समग्र कॉमनवेल्थ खेल आंदोलन के लिए ऐतिहासिक क्षण है।